सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

# जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरुदेव गणाधीश उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

• वर्ष : 12 • • अंक : 6 • • 5 सितम्बर : 2015 • • मूल्य : 20 रु. •

## गणाधीश विशेषांक

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चार दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

गुरुभक्त

सौ. ऊषादेवी-जसराज, सौ. कोमल-रवि, राहुल छाजेड़ परिवार (हरसाणी वाले),

(बेटी-जंवाई) सौ. रुचिका-गौरव बोथरा, बाड़मेर-इचलकरंजी

मणि विहार, 12/552/1 आर.पी. रोड़, इचलकरंजी-416115

फर्म : संपतराज बाबुलाल ॲण्ड कंपनी

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद से विभूषित करने पर
हार्दिक वंदन
वंदनकर्त्ता
श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाडी संघ
श्रीपाद नगर, चांदनी चौक, इचलकरंजी–416115 (महा.)
फोन : (0230) 2420700

## भगवान महावीर

दविए दंसणसुद्धी,
दंसणसुद्धस्स चरणं तु ॥
चरण पडिवत्तिहेउं धम्मकहा ॥

-ओघ निर्युक्ति भाष्य ७

द्रव्यानुयोग ( तत्त्वज्ञान ) से दर्शन ( दृष्टि ) शुद्ध होता है और दर्शन शुद्धि होने पर चारित्र की प्राप्ति होती है। आचार रूप सद्गुणों की प्राप्ति के लिये धर्मकथा कही जाती है।

# गणाधीश विशेषांक

आशीर्वाद
पू. गणनायक श्री सुखसागरजी म.सा.
पू. आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा.
पू. माताजी म. रतनमालाश्रीजी म.सा.

संपादन-संयोजन
पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

सह संपादन
बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.
साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.

# जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**


वर्ष : 12 अंक : 6 5 सितम्बर 2015 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन



जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है


### सदस्यता शुल्क

| | |
|---|---|
| संस्था संरक्षक | : 21,000 रूपये |
| मानद् संरक्षक | : 11,000 रूपये |
| 15 वर्षीय सदस्यता | : 2500 रूपये |
| 12 वर्षीय सदस्यता | : 2000 रूपये |
| 6 वर्षीय सदस्यता | : 1000 रूपये |
| त्रिवार्षिक सदस्यता | : 500 रूपये |
| वार्षिक सदस्यता | : 200 रूपये |

### विज्ञापन सहयोग

| | |
|---|---|
| अंतिम कवर पृष्ठ | : 15,000 रूपये |
| द्वितीय कवर पृष्ठ | : 11,000 रूपये |
| तृतीय कवर पृष्ठ | : 9,000 रूपये |
| अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन | : 7,000 रूपये |
| रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ | : 3,500 रूपये |
| सामान्य पूरा पृष्ठ | : 3,000 रूपये |
| सामान्य आधा पृष्ठ | : 1,500 रूपये |

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653


### सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर ( राज. )
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

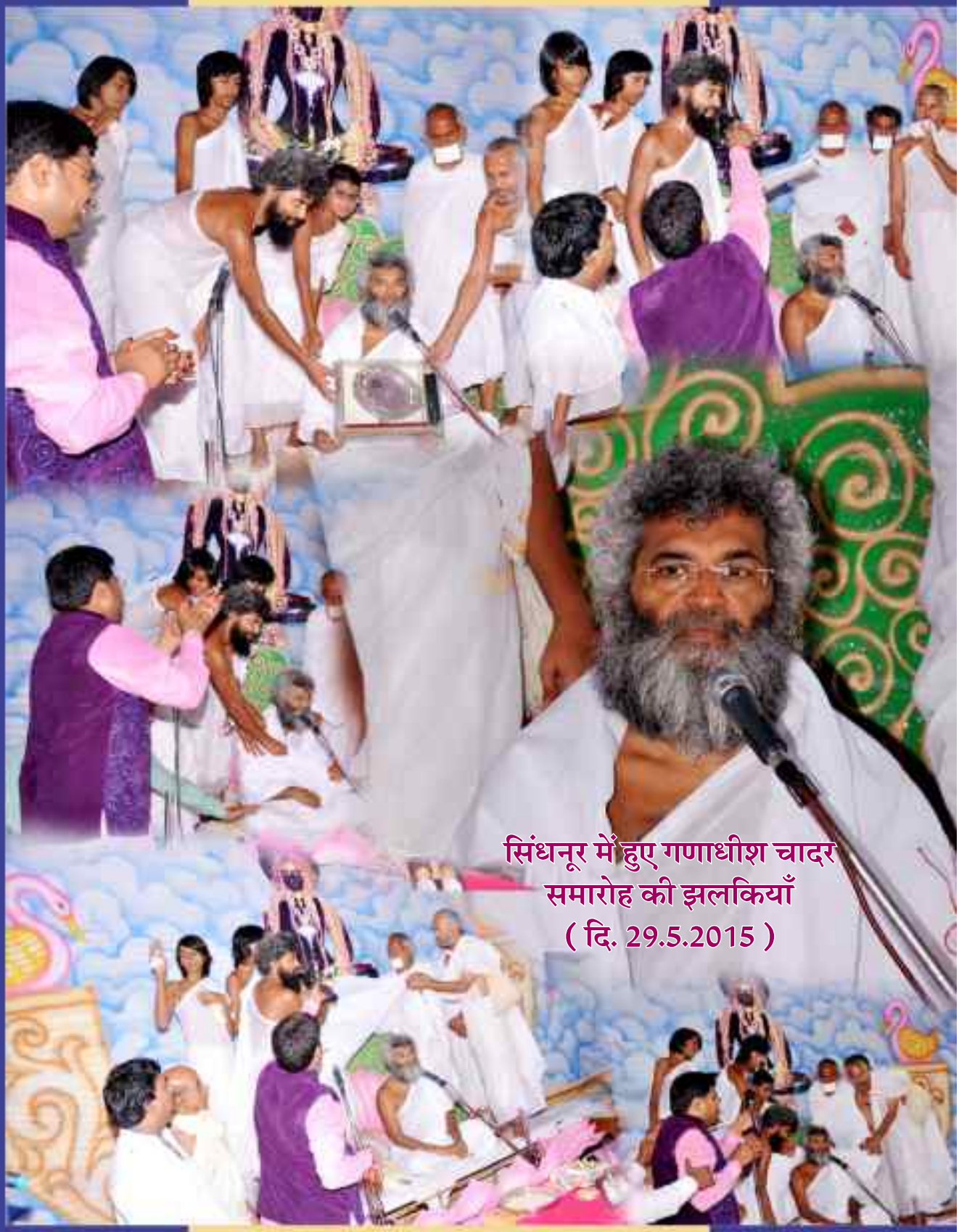

सिंधनूर में हुए गणाधीश चादर
समारोह की झलकियाँ
( दि. 29.5.2015 )

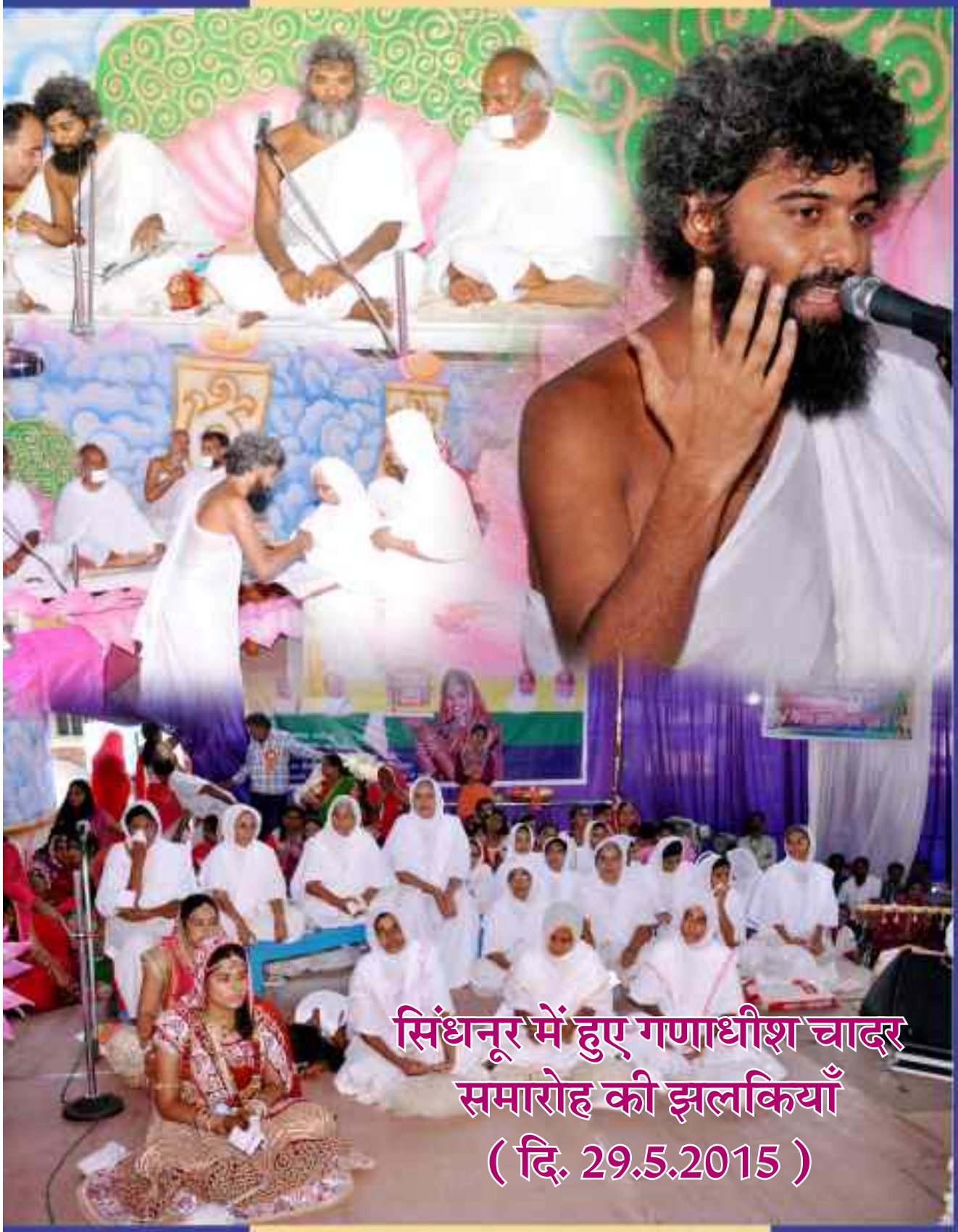

सिंधनूर में हुए गणाधीश चादर
समारोह की झलकियाँ
( दि. 29.5.2015 )

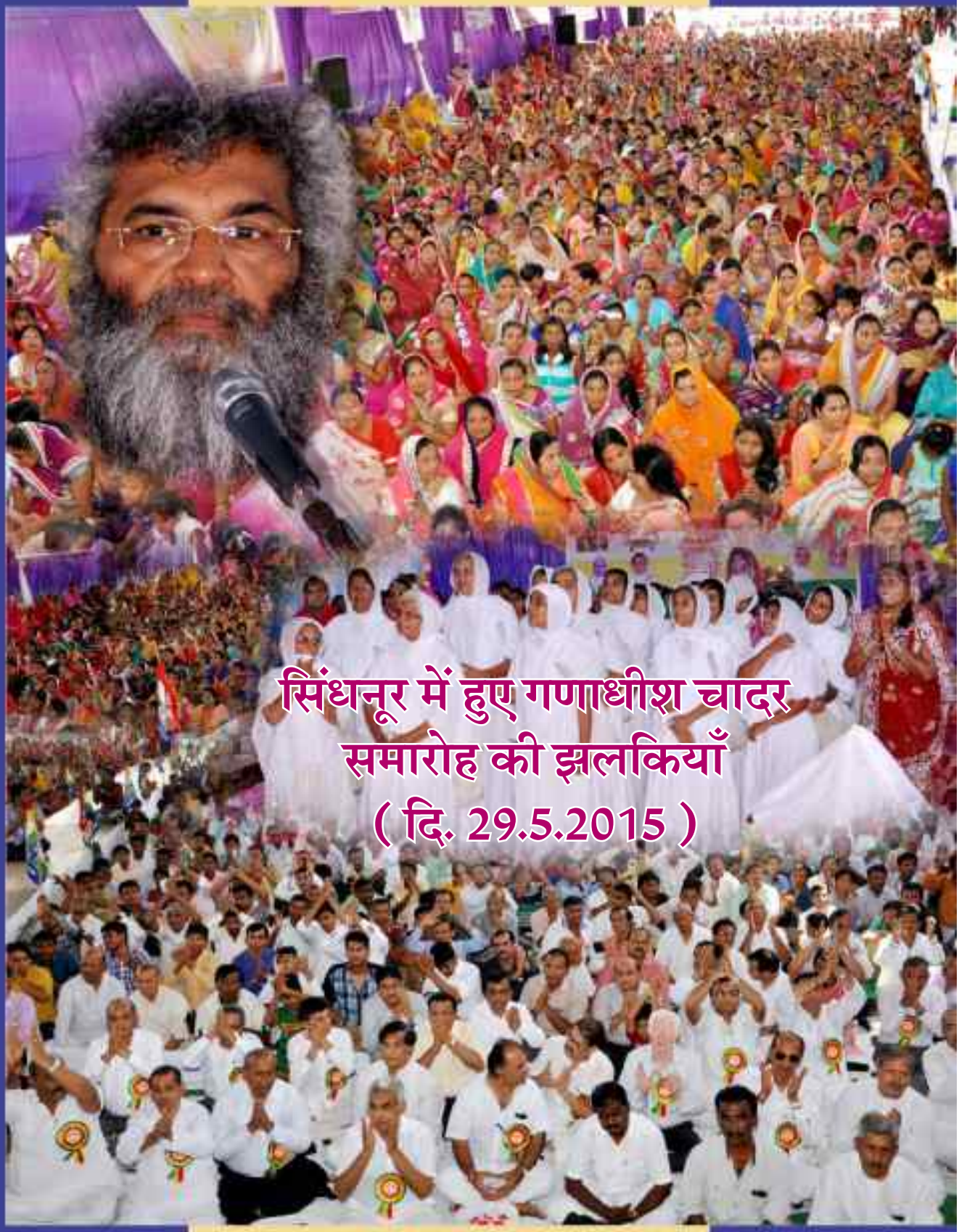

# सिंधनूर में हुए गणाधीश चादर समारोह की झलकियाँ

( दि. 29.5.2015 )

# अनुक्रमणिका


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | वे राम...मैं लखन | मुनि मनोज्ञसागर | 09 |
| 2. | हार्दिक शुभेच्छा | मुनि पूर्णानंदसागर | 09 |
| 3. | मेरे संयमदाता गुरुदेवश्री | मुनि मनीषप्रभसागर | 110 |
| 4. | गणाधीश पद पर आरुढ़ होने पर कोटिशः बधाइयां | मुनि मणिरत्नसागर | 13 |
| 5. | अभिनंदन स्वर्णिम प्रभात का | मुनि मनितप्रभसागर | 15 |
| 6. | आलोक भरा सफर 'मणिप्रभ' | मुनि मनितप्रभसागर | 27 |
| 7. | खरतरगच्छाधिपतिजी एक परिचय | मुनि मोक्षप्रभसागर | 35 |
| 8. | विराट् व्यक्तित्व | मुनि मैत्रीप्रभसागर | 37 |
| 9. | गच्छ और गच्छाधिपति | मुनि समयप्रभसागर | 39 |
| 10. | मैं अंधेरा, गुरु सवेरा | मुनि विरक्तप्रभसागर | 43 |
| 11. | मेरे प्यारे गुरुदेव | मुनि श्रेयांसप्रभसागर | 45 |
| 12. | Ganadhish Maniprabh SagarJi | Muni Malayprabhsagar | 47 |
| 13. | खरतरगच्छ का भाग्य सितारा | कीर्तिप्रभाश्री, सा. मनोरंजनाश्री | 49 |
| 14. | कवि हृदय-पूज्यश्री | साध्वी शशिप्रभाश्री | 51 |
| 15. | हार्दिक शुभकामना | साध्वी सुलोचनाश्री | 53 |
| 16. | हार्दिक अभिनंदन | साध्वी सूर्यप्रभाश्री, पूर्णप्रभाश्री | 55 |
| 17. | हार्दिक बधाई | साध्वी सुलक्षणाश्री | 57 |
| 18. | मेरी अभिन्न अनुभूतियाँ | साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्री | 59 |
| 19. | भावों का चंदन | साध्वी कल्पलताश्री | 73 |
| 20. | मनोहर भाव प्रसून | साध्वी मधुस्मिताश्री | 75 |
| 21. | सद्गुणों के पुंज : पूज्य गुरुदेव श्री | साध्वी विमलप्रभाश्री | 75 |
| 22. | भावपुष्प अर्पित | साध्वी प्रीतियशाश्री | 79 |
| 23. | अपने गुरुदेव | साध्वी गुणरंजनाश्री | 81 |
| 24. | बधाई के अमृत पलों में | साध्वी प्रीयस्मिताश्री | 83 |
| 25. | अन्तर की अभीप्सा | साध्वी डॉ. प्रियलताश्री | 85 |
| 26. | गणाधीश पद पर आसीन हुए गुरुदेव | साध्वी डॉ. प्रियवंदनाश्री | 91 |
| 27. | गुरु-गुणगान | साध्वी प्रियकल्पनाश्री | 93 |
| 28. | ऐसे हैं गुरुदेव | साध्वी विराग-विश्वज्योतिश्री | 95 |
| 29. | अनुपम अनुशासक पूज्य गणाधीश | साध्वी प्रियरंजनाश्री | 99 |
| 30. | बहुमुखी प्रतिभा के धनी | साध्वी कनकप्रभाश्री | 103 |
| 31. | गणाधीश का ताज...मोक्ष का साज... | साध्वी श्रद्धांजनाश्री, मुमुक्षु नीलिता | 105 |
| 32. | श्रद्धा का अभिषेक | साध्वी डॉ. नीलांजनाश्री | 107 |
| 33. | निर्मलता के निर्झर | साध्वी नीतिप्रज्ञाश्री | 121 |
| 34. | समर्पण की सुगंध | साध्वी विभांजनाश्री | 127 |
| 35. | हार्दिक शुभेच्छा | साध्वी प्रियप्रेक्षांजनाश्री | 129 |
| 36. | खरतरगच्छ दिवाकर को बधाई | साध्वी मयूरप्रियाश्री | 129 |
| 37. | पदाभिषेक अभिनंदना | साध्वी चारित्रप्रियाश्री | 130 |
| 38. | आस्था के दीप | साध्वी विज्ञांजनाश्री | 131 |
| 39. | गुरु मेरी पूजा...गुरु मेरी भक्ति | साध्वी प्रियश्रुतांजनाश्री | 137 |
| 40. | खरतरगच्छ शिरोमणिः गुरुदेवश्री | साध्वी प्रियदर्शांजनाश्री | 139 |
| 41. | मेरे गुरुवर मणिप्रभ तुमको वंदन | साध्वी सम्यकप्रभाश्री | 141 |
| 42. | अभिनंदन के फूल | साध्वी मेघांजनाश्री | 141 |
| 43. | हमारे गणाधीश प्रवर श्री कैसे हैं ? | साध्वी प्रियचैत्यांजनाश्री | 143 |
| 44. | सहपाठी बने शिखर पुरुष | तेजराज गुलेच्छा, बैंगलोर | 144 |
| 45. | जीवन के गहन चिंतक | रमेश बी. लुंकड़, इचलकरंजी | 146 |
| 46. | शुभकामना | मुमुक्षु रजत सेठिया, चौहटन | 148 |
| 47. | गुरुदेव का ओजस्वी चेहरा | चम्पालाल छाजेड़, मुम्बई | 148 |
| 48. | दिव्यता के धनी : गुरुदेव श्री | मुमुक्षु शुभम् लूंकड़, जोधपुर | 149 |
| 49. | सेवा का सौभाग्य | मुकेश प्रजापत, बाड़मेर | 150 |
| 50. | मेरे जीवनदाता गुरुदेव श्री | कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई | 151 |
| 51. | We Are Very Lucky to Have a Gurudev | सौ. नीतिका सुराणा, चैन्नई | 152 |
| 52. | घणी खम्मा | सोहन लूणिया, मुम्बई | 152 |
| 53. | प्रणाम तुम्हें गुरुदेव मेरे | सचिन पारख, रायपुर | 152 |
| 54. | गुरु उसको कहते हैं | पुरुषोतम सेठिया, बालोतरा | 153 |
| 55. | मणि गुरु गुण गीतिका | प्रसन्न चौपड़ा, मुंगेली | 153 |
| 56. | असीम आनंद के क्षण | सतीश-सुदीप कोचर, दुर्ग | 154 |
| 57. | अभिनंदन-गीत | श्रीमति दक्षा पी. मुणोत,रायपुर | 155 |
| 58. | पारस-मणि | राकेश पाण्डेय | 157 |
| 59. | संथारा आत्म हत्या नहीं | मुनि मनितप्रभसागर | 158 |
| 60. | संघवी पारसमलजी भंसाली एवं होनहार युवक निखिल भंसाली की अकल्पित विदायी | साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्री | 161 |
| 61. | मेरी अनुभुति | साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्री | 164 |
| 62. | समाचार दर्शन | संकलन | 166 |
| 63. | जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-112 | मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. | 171 |
| 64. | जहाज मंदिर पहेली 110 का उत्तर | | 173 |


**गणाधीश बनने पर**

सभी धर्मप्रेमियों एवं भक्तजनों को हार्दिक शुभकामनाऐं

**जहाज मन्दिर परिवार**

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन ... अभिनंदन

चम्पा– जितेन्द्र ज्योति प.पू. धवल यशस्वी
श्री विमलप्रभा श्री जी म.सा. की चरणाश्रिता
प.पू. विश्वरत्ना श्री जी म.सा. की प्रेरणा से

प. पू. श्री विमलप्रभा श्री जी म.सा.

प. पू. श्री विश्वरत्नाश्रीजी म.सा.

एक बार अवश्य पधारें :
जहां विश्वास ही परम्परा है

**Tejraj Malani** (मोकलसर वाले)

## सभी प्रकार के मांगलिक प्रसंगों पर

प्रसाधन साम्रगी, चॉकलेट, स्प्रे, घड़ियां, टोयस (खिलौने),गारमेन्ट आदि
ओरिजनल आइटम का बेंगलोर में एक मात्र विश्वसनीय स्थान

Manoj Malani **MAHAVEER SELECTION**

B-5, Bajaj Complex A.C.,
Gandhi nagar, **Bangalore-** 560 009 (Ph.: 080-41242520 Cell: 9449241231)

**MAHIMA NOVELTIES** Anand Malani

# 28, Mahaveer, Palaza A.C., National Market
Gandhi nagar, Bangalore- 560 009 (Ph. : 080- 41242485, Cell : 94483 50333)

# वे राम... मैं लखन

मुनि मनोज्ञसागर

1973 का स्वर्णिम वर्ष। सिद्धाचल की पावन छाया... श्री जिनहरिविहार धर्मशाला में मेरे जीवन तारक गुरूदेव श्री बिराज रहे थे। हम पिता-पुत्र ने गुरूदेव श्री के प्रथम दर्शन करने के साथ बालमुनिश्री (वर्तमान में गणाधीश) से मैंने पहली मुलाकात की। हमउम्र, बचपन और नाम में भी लगभग समानता, गणाधीश भगवन्त का सांसारिक नाम- मीठालाल व मेरा-मिश्रीमल, मीठा-मिश्री। मेरे जीवन नैया के तारक गुरूदेव श्री मज्जिन- कान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के चरणों में पहुँचाने वाले मेरे उपकारी पू. पिताश्री प्रतापमल जी छाजेड़ (मुनि श्री प्रतापसागरजी म.सा.) और संयम-जीवन, गुरूशरण व जिनशासन-महिमा का बोध देने वाले मेरी गुरू मैया श्री मोहन श्रीजी म.सा., श्री किरण श्रीजी म.सा., श्री हेमलता श्रीजी म.सा., इन सभी उपकारी जनों की कृपा से संयम पथयात्रा में पू. मणिप्रभसागर जी म.सा. का आत्मीय सहज साथ मिला। हम दोनों गुरु भाईओं के बीच हमउम्र की एक बहिना भी रही -साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.। गुरूदेवश्री की असीम कृपा व हम तीनों का बाल्यचपलता युक्त संयम।

मैं जब-जब बालमुनि श्री के साथ तीर्थयात्रा या मन्दिर को जाता, तो देखने वाले सभी साधु-साध्वी व श्रद्धालु गण हमें ''राम-लक्ष्मण'' कहकर पुकारते थे। मेरे गुरूदेवश्री भी बड़े लाड से मणि-मनोज्ञ कह कर बुलाते थे। करीब 42 वर्षों से आपश्री के साथ-साथ आत्मीयता पूर्ण सहयोग व सम्यक् मार्गदर्शन से

मेरी संयम यात्रा निर्विघ्नता पूर्वक अग्रसर है। मणि से गणि व उपाध्याय बने और अब गणाधीश बने। मुझे आत्मीय गर्व है, स्वाभिमान है कि मेरे बड़े गुरू भाई गच्छ व शासन के सरताज बने हैं। पू. गणाधीश भगवन्त शीघ्र आचार्य पद से सुशोभित हो।

गणाधीश भगवन्त श्री मणिप्रभसागर गुरूदेव।
मनोज्ञ, कल्पज्ञ और नयज्ञ करे कामना, करना अमीवर्षा आप सदैव।।

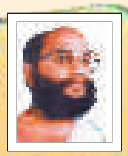

# हार्दिक शुभेच्छा

गणि पूर्णानंदसागर

निस्संदेह प्रसन्नता है कि अपने समवयस्क बंधु को गणाधीश पदारूढ होते देख रहा हूँ। आपश्री के सरंक्षण में चतुर्विध संघ एकता के सूत्र में आबद्ध हो, परस्पर सद्भावधारा सह वात्सल्यमय विचारणा से सम्मान एवं मैत्री-निर्झर में भीगता रहे।

संघस्थ महात्माओं का समादर हो। संघ फले-फूले एवं पारसमणिवत् अपनी प्रभा से हर दिल को स्वर्ण बनाने में आपको कामयाबी मिले। संघ का सौभाग्य-उदय हो, पूर्ण-आनंद प्रसृत हो, आपकी कान्ति मणिवत् बिखरे, गुरूदेव से यही विनम्र प्रार्थना ... यही शुभेच्छा।

मरूधरमणि

प.पू. उपाध्याय प्रवर

**श्री मणिप्रभसागर जी म.सा.**

को

# गच्छाधिपति

## (गणाधीश)

# पदारोहण पर

प्रेरणा

पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री पूर्णप्रभा श्रीजी म.सा.

हार्दिक शुभकामनाएँ

हे गुरूदेव...

गुजरे जीवन का हर लम्हा, प्रगती का पैगाम लिए
जरा यूंही बीते ये घडियां, हर पल नव आयाम लिए
नजर जिस दिल पर पडी, वह निर्मल बन जाते है
हाथ जिस जिस राहों पर, लगे वो फूल बन जाते है

आपके चरण कमल,
जहाँ जहाँ भी पड़ते है
वहाँ कदम कदम,
पर फूल खिल जाते है

वंदनकर्त्ता

**श्री जिन कुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट कोट्टूर**

हार्दिक बधाई के साथ अनंत शुभ कामना

# मेरे संयमदाता गुरूदेव श्री

मुनि मनीषप्रभसागर

अगर आप संयम का हृदय में बीज ना बोते,
तो हम संसार में खाते रहते सदा गोते।
न ये भावना होती, न जीवन मंत्र ये होते,
भटक जाता मैं भव-भव में जो ये गुरूदेव ना होते ॥

जीवन बदलता है। बदलने की घड़ियाँ आती हैं। विचार बदलते हैं, बदलने का सुअवसर आता है। बदलने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान होता है संयोगों का एवं व्यक्तियों का। वे ही संयोग, वे निमित्त, वे व्यक्तित्व हमारे लिए पूजनीय, वंदनीय और श्रद्धास्पद बन जाते हैं।

वैसे पूर्वजन्म के संस्कार व पारिवारिक वातावरण के फलस्वरूप बचपन से ही मुझे धर्म के प्रति रूचि रही है। मुझे अपने निश्छल स्नेह और वात्सल्य की धारा में भिगोने वाले प.पू. गणाधीश उपाध्याय प्रवर मरूधर मणि श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. हैं।

प्रथम झलक में ही मुझे ऐसा लगा कि जैसे पू. गुरूदेव श्री मेरे चिरपरिचत हैं। कोई झिझक महसूस नहीं हुई उनसे बातचीत करने में। थोडे पलों के परिचय में ही लगा कि मुझे मेरा प्रेरणा स्रोत, श्रद्धा केन्द्र मिल गया। इनकी आँखों में स्नेह की स्निग्धता है, हृदय में वात्सल्य का अथाह सागर है।

हृदय में हर्ष की लहरें उमड़ रही है कि पू. गुरूदेव श्री गणाधीश बने हैं।

शासन प्रभावना के क्षेत्र में आपका कोई सानी नहीं। दीक्षा, प्रतिष्ठा, उपधान, अंजनशलाका, पद यात्रा संघ, हर क्षेत्र में आपका अपना कीर्तिमान है।

''तुम्हारे निर्णय में जो ऊँचाई,
पर्वत के शिखर में कहाँ।
तुम्हारे निश्चय की गहराई,
समुद्र के अंतर में कहाँ।।''

पर्वत में ऊँचाई है, गहराई नहीं, समुद्र में गहराई है तो ऊँचाई नहीं। दोनों लक्षण गुरूदेव में विद्यमान हैं। मेरे प.पू. गुरूदेवश्री, वर्तमान गच्छाधिपति श्री पर्वत से भी ऊँचे और समुद्र से भी गहरे हैं।

आपश्री का जीवन अध्यात्म साधना का है। आपके मधुर ओजस्वी स्वर में जिनवाणी का नाद गूंजता है।

वास्तव में विद्वत्ता, तपस्विता और प्रभावकता तो पुरूषार्थ से भी उपार्जित की जा सकती हैं, परंतु लघुता, सौम्यता, सहजता आदि ऐसी आत्मिक उपलब्धियाँ हैं, जिन्हें पूर्वजन्म की उत्कृष्ट साधना से ही पाया जा सकता है। इसी सरलता और सहजता से वे जन-जन के प्रिय बने हैं। मेरे गुरूदेवश्री को इस विशेष अवसर पर हृदय की गहराईयों से मंगल कामनाएँ।

मरूधरमणि
प.पू. उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागर जी म.सा.
को
गच्छाधिपति
(गणाधीश)
पदारोहण पर

RAJESH MEHTA
M. : 9426011763
RAKESH MEHTA
M. : 9427314506

हार्दिक शुभकामनाएँ

Suri Rajendra Metal

STOCKIST & SUPPLIERS
IN STALNLESS STEEL 304, 316, 410 & HEX ROUND
PIPES,SHEETS & NON-FERROUS METALS

2/4, Durga Estate, opp. Ajay Estate, Gujarat Bottling Road, Rakhial, Ahmedabad-23
Ph. : (0) 30417637, Tele Fax : 079-22742845
E- Mail : Surirajendra079@yahoo.in

KAMDHENU
Metals

Dealers in :
Ferrous & Non-Ferrous Metals

Raju Jain
M. : 9825625676

मरूधरमणि
प.पू. उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागर जी म.सा.
को
गच्छाधिपति
(गणाधीश)
पदारोहण पर

हार्दिक शुभकामनाएँ

# कोटिशः बधाई

आचार्य श्री जिनमहोदयसागरसूरि के प्रथम पट्टधर शिष्य
**मुनि मणिरत्न सागर**

यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि आपको खरतरगच्छ समुदाय के सुखसागर जी की परम्परा में गणाधीश पद पर आरूढ किया गया है। इस पदारोहण पर आपको कोटिशः बधाइयां एवं मंगलकामनाएं। निश्चित ही महासंघ का यह निर्णय स्वीकार्य एवं अनुमोदनीय है। पूर्ण विश्वास है, आपके कुशल मार्गदर्शन में खरतरगच्छ संघ समाज उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

आपके कुशल मार्गदर्शन एवं सानिध्य में शीघ्र ही खरतरगच्छ सम्मेलन का आयोजन होने जा रहा है। अग्रिम बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों
दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष
युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को

**गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

## शत शत वंदन...अभिनंदन

आपके कुशल
नेतृत्व में
खरतरगच्छ संघ
प्रगति करता रहे...

**प्रेरणा**

धवल यशस्वी
प. पू. साध्वी श्री विमलप्रभा श्री जी म.सा.

आपकी कृपादृष्टि
हम पर
सदा बनी
रहे...

**वंदनकर्ता**

सरपंच श्रीमती कमलादेवी धर्मपत्नी भंवरलालजी डोशी
पुत्र : अशोक कुमार, कैलाश कुमार डोशी
चौहटन

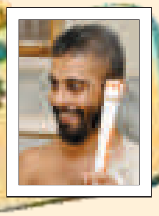

(गच्छाधिपति चादर समारोह में संचालक मुनि मनितप्रभसागरजी म. सा. द्वारा प्रदत्त प्रवचनांश)

# अभिनंदन स्वर्णिम प्रभात का

मुनि मनितप्रभसागर

जिस अपूर्व गरिमामय चादर समारोह को निहारने के लिये हजार-हजार आँखें आनंद से प्रफुल्लित होकर केवल और केवल मंच की ओर गुरूदेवश्री को निहार रही हैं, जिस गच्छाधिपति चादर-समारोह के एक एक शब्द को सुनने के लिये हजार-हजार कर्णपटल आतुर होकर अपनी प्रसन्नता को हृदय में समेट नहीं पा रहे हैं, जिस उज्ज्वल-समुज्ज्वल चादर-धारण के सुन्दर दृश्य को मानस में स्थापित करने के लिये हजार-हजार मन-नयन श्रद्धा से मंच की ओर उन्मुख हैं, निश्चित रूप से यह दृश्य, ये शब्द और यह वातावरण अपने आप में कितना गरिमापूर्ण, आनंदपूर्ण और श्रद्धापूर्ण है।

धन्य हैं वे लोग, जो आज यहाँ दिव्य पाण्डाल में बैठकर गणाधीश चादर समारोह को देखने के आनंद में पलकें झपकाना भूल गये हैं, वे कर्ण धन्य होंगे, जो **'गच्छाधिपति'** अलंकरण को सुनेंगे। वे आँखें धन्य होगी, जो गच्छाधिपति की विधि देखेंगे। वे होंठ धन्य होंगे, जिन होठों पर जय-जयकार होगी। वे हृदय धन्य होंगे, जिनमें श्रद्धा का अमृत लहरायेगा। निश्चित रूप से आज का यह वातावरण, यह सिंधनूर की धरा धन्य-धन्य हो गयी है।

आज गाँव-गाँव से, नगर-नगर से, डगर-डगर से लोग आये हैं, पर क्यों आये हैं?

वे देखने आये हैं गच्छाधिपति चादर समारोह की स्वर्णिम झलकियाँ। आज का चादर अर्पण का यह कार्यक्रम अपने आप में तेज, ओज और गरिमा से भरा हुआ है।

यह चादर केवल चादर नहीं है, चादर तो बाजार में

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

## पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

## को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

अभिनंदन

प्रेरणा

प. पू. श्री विमलप्रभा श्री जी म.सा.

प.पू. विश्वरत्ना श्री जी म.सा.

पुखराज–ललिता देवी, राजेश– नंदा देवी, प्रवीण–कवितादेवी,

रमिल–पायलदेवी, श्रेयांस, मनन, माहिर, जिया, ऋदांत, जयणा

समस्त पालरेचा परिवार बेंगलोर (मोकलसर)

**P. R. SHAH**

286, kavery house, 17th cross sadashiv nagar

near janta bazar **BANGALORE**

भी मिलती है, चादर के लिये दो-तीन हजार रूपये में अच्छा से अच्छा कपड़ा मिल सकता है पर यह एक ऐसी चादर है, जिस चादर में है-मर्यादा और अनुशासन का रंग, जिस चादर में है यंत्र, मंत्र और तंत्र का त्रिवेणी संगम, जिस चादर में है-साधु साध्वी एवं सकल संघ के प्रति वात्सल्य की सरिता, जिस चादर में है-सहनशीलता, गंभीरता, उदारता, मधुरता, सरलता जैसे गुणों का पावन मिलन।

निश्चित रूप से चादर का यह कार्यक्रम कोई सामान्य कार्यक्रम नहीं है। यह कार्यक्रम है-जीवन का कार्यक्रम, मर्यादा का कार्यक्रम और आनंद का कार्यक्रम।

जिनवल्लभसूरि के समय में यही खरतरगच्छ विधि-मार्ग के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

उसके बाद दादा गुरूदेव जिनदत्तसूरि के समय में **'खरे हो'** का यह मंगलमय, शान्तिमय, गौरवमय अलंकरण खरतरगच्छ के रूप में विख्यात हो गया।

यह वही गच्छ है, जिसने जैन-निर्माण, जीवन निर्माण, संत-निर्माण, ग्रंथ-निर्माण, संस्कार-निर्माण में एक अतुलनीय भूमिका निभायी। इस गच्छ ने व्यसन-मुक्ति, आत्म-शक्ति और परमात्म-भक्ति का संदेश दिया तो शिथिलाचार के उन्मूलन एवं सदाचार के प्रवर्तन का दिव्य उद्घोष भी किया।

## अहो! इतनी उदारता

भारत की हृदय-स्थली मुम्बई में चातुर्मास के उपरान्त उपधान की आराधना निर्णीत थी। खरतरगच्छ की अनमोल धरोहर भायखला दादावाडी के पवित्र ऊर्जामय परिसर में पूज्यश्री के प्रवचनों का लाभ संपूर्ण भायखला जैन संघ ले रहा था, अत: खरतरगच्छ और तपागच्छ के श्रावकों का सामूहिक प्रतिक्रमण पूज्य श्री की निश्रा में होता था। इसमें जहाँ पाठ भेद होता, वहाँ पूज्य श्री फरमाते या फिर श्रावक स्वयं बोलते। चतुर्दशी के प्रतिक्रमण में श्रुत देवता की स्तुति में भेद था। खरतरगच्छ में 'कमलदल' चलती है तो तपागच्छ में 'सुयदेवया'।

कुछ श्रावकों ने दबी जुबान में एक दिन कहा-गुरूदेव! आप हमारी स्तुति फरमाने की कृपा करे तो?पूज्य श्री ने उदार मनोवृति दर्शाते हुए उनकी स्तुति बोली। न कोई कदाग्रह, न कोई नकारात्मक प्रत्युत्तर या नाराजगी का भाव। यह देखकर लोग पूज्य श्री की समन्वयपरक भावधारा पर न्यौंछावर हो गये।

खरतरगच्छ की यह पावन परंपरा अपने हजार वर्ष की पूर्णता के निकट खड़ी है। विक्रम संवत् 1075 में प्रारंभ हुई यह परंपरा खरे आचार का शंखनाद है। जिनेश्वरसूरि महाराज को पाटण नरेश दुर्लभ राजा ने कहा-आप खरे हैं, आपके सिद्धांत खरे हैं। आपका आचरण, आचरण की श्रेष्ठता, श्रेष्ठता की शुद्धता, शुद्धता की गंभीरता, गंभीरता की उदारता पावन है, उज्ज्वल है, समुज्ज्वल है। पंचासरा पार्श्वनाथ के दरबार में शुरू हुई प्रखर गौरवमयी यह परंपरा उनके समय में सुविहित मार्ग, संविग्न पक्ष के रूप में प्रसिद्ध हुई। आगे जाकर

इस गच्छ में एक से बढ़कर एक मनस्वी, तेजस्वी, ऊर्जस्वी, विद्वान् आचार्य, उपाध्याय, साधु हुए, जिन्होंने अपने ज्ञान बल से, ध्यान बल से और विवेक बल से शासन की जड़ों को आचार के अमृत से सिंचने का भगीरथ पुरूषार्थ निभाया।

सर्वगच्छमान्य नवांगी वृत्तिकार अभयदेवसूरि इसी स्वच्छ सरिता की एक धारा है तो गणधर गौतम स्वामी के बाद एक साथ सर्वाधिक दीक्षाएँ देने का कीर्तिमान दादा जिनदत्तसूरि के नाम है।

मात्र छह वर्ष की उम्र में दीक्षा लेकर 8 वर्ष की उम्र में आचार्य बनने वाले मणिधारी जिनंचद्रसूरि इसी

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...अभिनंदन

शुभेच्छुक

राजेश–राजुल, कमल–सुधा, रिषभ–सोनल, श्रेयांस–अंकिता

अरिहंत, शालीभद्र, अर्हम्, जिनिशा बरड़िया

**ओमजी दवाई वाला परिवार, ब्यावर**

आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...



शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...अभिनंदन

शुभेच्छुक

ताराचंद, दीपचंद, सौभागमल, पारसमल, पदम, सुनील, विनय, विकास, पीयूष कोठारी परिवार

**मदनलाल पारसमल**

लोहिया बाजार, ब्यावर (फोन : 01462–258459) 9829512187

आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...

खरतर-नभ के चमकते चन्द्र हैं तो आठ अक्षर के दस लाख से अधिक अर्थ करके बादशाह अकबर सहित संपूर्ण भारत वर्ष को चकित करने वाले महोपाध्याय समयसुंदर भी इसी खरतर वाटिका के खिलते पुष्प हैं, कितने-कितने नाम ले- संवेगरंगशाला के कर्ता जिनचंद्रसूरि, जिनवल्लभसूरि, जिनकुशलसूरि, जिनप्रभसूरि, जिनभद्रसूरि, अकबर प्रतिबोधक जिनचंद्रसूरि, आनंदघन, प्रखर विद्वान् देवचन्द्र, क्षमाकल्याण, गणनायक सुखसागर ऐसे दैदीप्यमान सितारे हैं, जिनसे आज भी जिनशासन गौरवान्वित और श्रद्धान्वित हैं।

आज 1075 में शुरू हुई इस गौरवपूर्ण परंपरा के सामने 2075 का शुभ अंक खड़ा है अर्थात् अपने हजार वर्षों की पूर्णता के क्षणों में एक सुयोग्य गुणों से छलकता हुआ, शास्त्र और ज्ञान से छलकता हुआ अपूर्व व्यक्तित्व विराजमान है तो यह कार्यक्रम केवल एक समारोह नहीं अपितु एक नया आह्वान, एक नया आलोक, एक नया उद्घोष, एक प्रकाश स्तंभ, एक प्रेरणा स्तंभ बनकर अवतरित हुआ है।

एक बीज किस प्रकार विशाल बरगद का आकार ग्रहण करता है, एक बिन्दु किस प्रकार विराट् सिन्धु में बदलता है, एक मटमैला, ठोकर खाता, मेला-नुकीला पाषाण किस प्रकार पूज्य प्रतिमा के रूप में बदलता है, एक सामान्य शब्द किस प्रकार चमत्कारी मंत्र बनता है, उसकी अमिट कहानी, सुहानी कहानी और इतिहास की जुबानी देखनी हो तो हमारे सामने विराजमान है पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.।

जिनका जीवन अपने आप में सागर की तरह गंभीर है, तो सूरज के समान तेजस्वी और चन्द्र के समान सौम्य है। वे गंगा की तरह निर्मल हैं तो पृथ्वी की तरह सहनशील भी हैं। वे वायु की तरह अप्रतिबद्ध हैं तो आकाश की तरह निरालंब भी हैं।

निश्चित रूप से ऐसे पावन व्यक्तित्व पर हम नजर डालते हैं तो सहस्राब्दी की पूर्णता के करीब खडी खरतरगच्छ की प्रखर परंपरा अनेक नये आयामों का स्पर्श करेगी, ऐसा मैं मानता हूँ। एक गंभीर व्यक्तित्व, एक उज्ज्वल-समुज्ज्वल व्यक्तित्व, एक शुभ्र व्यक्तित्व, योग्य आसन पर विराजमान हो रहा है तो निश्चित ही उस पद की महिमा, उस पद की गरिमा हजार-हजार, लाख-लाख गुणा बढ़ जाती है।

अभिनंदन के इन क्षणों में, बधाई के इन पलों में, अर्चना-पूजना-वंदना की इन घड़ियों में मैं सोच रहा हूँ कि सबसे पहले बधाई किसे दूँ?

आप क्या कहेंगे, किसे दूँ मैं सबसे पहली बधाई?आज मैं सबसे पहले बधाई उस मातेश्वरी को देना चाहूँगा, मोकलसर की वह मातेश्वरी, धर्म माता, संघ माता, गच्छाधिपति की माता रोहिणी देवी, जो आज पूजनीया माताजी म. रतनमालाश्रीजी म.सा. के नाम से विख्यात है, उस माँ को वंदना करूँगा, जिस माँ ने एक पाषाण को तराशा। वह 13 वर्ष का बालक क्या समझ सकता था। उसे और उसकी बहिन विमला, दोनों बच्चों को तराशना, दोनों को संस्कारों से भरना कोई सामान्य काम नहीं था।

वो भी 45-50 वर्ष पुराना समय। समाज की मर्यादाएँ, नीति-नियम और रीति-रिवाज बिल्कुल अलग, उन सामाजिक परंपराओं को जीवन में जीना। लम्बा घूँघट, केवल घरेलू कामकाज, बाहर में कहीं भी आना-जाना नहीं, ऐसे समय में आग्नेय संकल्प की धनी उस माँ ने अकेले अपने बल पर, गंभीरता के बल पर बीड़ा उठाया कि मुझे मेरे बच्चों को संसार में नहीं भेजना। ऐसी माताएँ तो लाखों-करोड़ों हैं, जो अपनी संतान की शादी के सपने देखती हैं मगर ऐसी माता, जो वाहड़ देवी के रूप में जिनदत्तसूरि को, जो देल्हण देवी के रूप में मणिधारी जिनचन्द्रसूरि को, पाहिणी के रूप में हेमचन्द्राचार्य को प्रदान करती है। कोई भद्रबाहु के रूप में तो कोई हरिभद्र के रूप में अपनी संतान को शासन की गोद में सौंप देती है।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

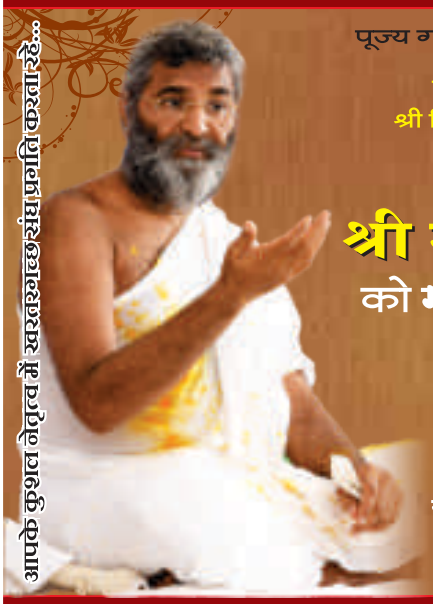

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**
को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...अभिनंदन

शुभेच्छुक
सेठ कंवरलाल, बलवंत, यशवंत, अर्चित, दर्शन रांका परिवार
**सेठ मंगलचन्द चम्पालाल**

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...

नं. 20, महावीर बाजार, ब्यावर–305901 (फोन : 01462–258473) 98290 71473

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

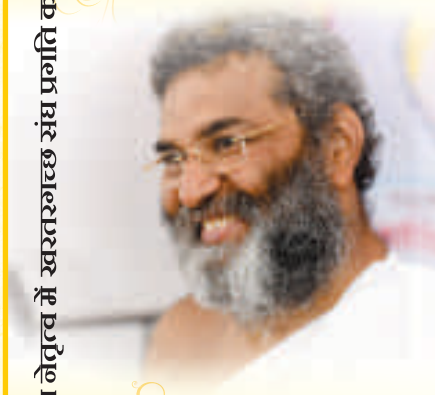

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**
को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...अभिनंदन

शुभेच्छुक
**श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ नवयुवक मण्डल, ब्यावर**
यशवंत रांका (अध्यक्ष)93524 11473 नरेन्द्र भंडारी (मंत्री) 9460194441
एवं समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य गण

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...

श्री जैन श्वेताम्बर दादावाडी, बिजयनगर रोड़, ब्यावर (फोन : 01462 254866)

निश्चित रूप से यह जिनशासन चल रहा है तो उसमें केवल उन संघ माताओं का त्याग और समर्पण ही काम कर रहा है। न होती उन माताओं की भावना, न करती अपनी ममता का बलिदान, न बनाती अपनी छाती को कठोर और न सौंपती अपने बच्चे को शासन की गोद में, महावीर की गोद में, संघ की गोद में, गच्छ और समुदाय की गोद में तो निश्चित रूप से जो शासन हमें आज दिव्य-भव्य रूप में प्रगति के शिखर पर दिखाई दे रहा है, वह दिखाई नहीं देता इसलिए मैं सबसे पहले उस मातेश्वरी को प्रणाम करना चाहूँगा, जिसकी रत्न कुक्षि से ऐसा बेशकींमती कोहिनूर हमारे संघ को उपलब्ध हुआ।

अधिकतर लोग अपनी जिंदगी में योग्य बनाने वाले सुयोग्य उपकारी जनों को भूल जाते हैं।

महल के कंगूरे को हर कोई प्रणाम करता है पर वह उस नींव को प्रणाम करना भूल जाता है, जिसके बल पर महल का अस्तित्व टिका हुआ है। विशाल बरगद की हर कोई प्रशंसा करता है पर वह भूल जाता है कि न होता बीज तो यह बरगद कहाँ से आता?

मैं याद कर रहा हूँ पूज्य प्रवर की जन्मभूमि मोकलसर को, उसमें बसी लूंकड़ों की वास और उसमें रहने वाले श्रावक रत्न मेरे ताऊजी श्री पारसमलजी लुंकड को, जिनका अंश आज परमात्मा महावीर का नाम रोशन कर रहा है। जिनका नयन-नंदन आज स्वयं शासन नंदन बनकर पारसमणि के रूप में विख्यात हो चुका है। जो छुएँ, वो स्वयं पारसमय बन जाएँ, जो छुएँ, वह सोना बन जाएँ, जो स्पर्श करे, वह कुंदन बन जाएँ।

तप-तप कर सोना बनता है कुंदन।
घिस-घिसकर सुगंध देता है चंदन।
गुण-पुष्पों से खुद को बनाया है उपवन,
ऐसे पूज्य गणाधीश प्रवर के चरणों में वंदन ।।
और भी कहना चाहूँगा
पलके झुके तो नमन हो जाएँ,
गर्दन झुके तो वंदन हो जाएँ।
दृष्टि ऐसी देना गुरूवर,
बंद नयनों से भी तेरे दर्शन हो जाएँ।।

आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...अभिनंदन

शुभेच्छुक

**श्रीमान् माणकचन्द, गौतमचन्द, राजेन्द्रकुमार, लोकेश, शुभम्, रजत चौपड़ा**

**गौतमचन्द प्रकाशचंद चौपड़ा**

अजमेरी गेट, ब्यावर (फोन : 01462 250598, 250597)

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...



आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...अभिनंदन

शुभेच्छुक

**श्रीमती रतनदेवी धर्मपत्नी स्व. चेतन कुमारजी, गुलशन कुमार–सरोजदेवी**

**मोहित कुमार–मोनिका बैंगाणी परिवार**

**ओसवाल डिस्ट्रीब्यूटर्स**

ए.के. हॉस्पिटल रोड़, ब्यावर (मो : 94133 02943)

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...

निश्चित रूप से पहली बधाई उस मातेश्वरी को, जिसने अपने लाल को शासन का लाल बनाया। अपने दीप को शासन का दीप बनाया, और दीप ही नहीं, शासन का सूर्य बनाया और सामान्य सूर्य नहीं, दैदीप्यमान प्रखर चमकता हुआ तेजस्वी सितारा बनाया, जिसके आलोक में पूरा शासन प्रगति के नये सोपानों पर बढ़ रहा है।

मैं दूसरी बधाई देना चाहूँगा पूज्य आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. को, जिनके सुघड़ हाथों ने इस अनगढ़ प्रस्तर को तराशकर चमकती मणि का आकार दिया।

माँ ने तो अपने लाल को गुरूदेव को समर्पित कर दिया था पर अब पल्लवित करने का सारा उत्तरदायित्व पूज्य आचार्यश्री का था। कोई व्यक्ति बीज को बोये पर उस बीज को उर्वरा धरती न मिले। न मिले वात्सल्य और प्रेम का पानी, न मिले मर्यादा की बाड़, न मिले संरक्षण की धूप, तो वह बीज बरगद तो क्या बनेगा, सामान्य पौधा भी नहीं बन पायेगा।

कांति नामक माली ने बीज को परखा। उसमें विकास और विस्तार की अगणित संभावनायें देखी, तब बागबाँ बनकर अनुशासन की धूप, वात्सल्य का नीर और मर्यादा की बाड़ देकर उसे पल्लवित किया। वही बीज अंकुरित होकर एक छायादार, घटादार, फलदार वटवृक्ष के रूप में हमारे सामने खड़ा है।

गुरुदेव ने मीठालाल नामक अनपढ़ प्रस्तर को देखा, जाना-पहचाना, वे अपनी दिव्य दृष्टि से जान गये कि यह पत्थर लोगों की दृष्टि में सामान्य पत्थर है पर जब इसे विनय, विवेक और विद्या की छैनी से तराशा जायेगा, तब लोगों को पता चलेगा कि मूल्यहीन दिखने वाला पत्थर, पत्थर नहीं अपितु शासन की बेनमून समुज्ज्वल मणि है। ज्ञान, ध्यान और सहनशीलता की मणि है। आचार्य श्री पालीताणा में विराजे, पण्डितों को लगाया, पढ़ाई के सिवाय और कोई काम नहीं। कठोर अनुशासन, घोर अनुशासन। चार बजे उठना यानि उठना। उठकर पढ़ाई करना, जोर-जोर से गाथा याद करना, पुराने पाठ सुनाना और पूज्यश्री ने भी उस अनुशासन में स्वयं को ढाला, तभी तो 'मणिप्रभ' गुणों के अक्षय कोष बन पाये।

हमने देखा है कोई साधु प्रवचनकार होता है पर लेखक नहीं होता। कोई लेखक होता है तो वक्ता नहीं होता। पर पूज्यश्री प्रखर वक्ता है तो लेखक भी है। उन्होंने संस्कृत, प्राकृत और ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया है। उनके शिल्पज्ञान का कोई सानी नहीं। माण्डवला जाओ तो वहाँ जहाज मंदिर आँखों को लुभा जाता है। बाड़मेर में राजहंस मंदिर, पालीताना में मयूर मंदिर, सकल विश्व में जागरण का घण्टनाद करने वाला शहादा का सुघोष घण्ट

## श्रमणी-सम्मान

पूज्य गुरूदेव श्री को मैंने इन तेरह वर्षो में निकटता से जाना-पहचाना है और मैं निष्कर्षत: कह सकता हूँ कि उनका हृदय अपने उपकारी गुरूजनों के प्रति तो कृतज्ञ है ही, इसके साथ अन्य साधु-साध्वियों के प्रति भी कृतज्ञता से संवेदनशील है।

इसी कारण उन्होंने विदुषी साध्वी रत्न श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. को 'खानदेश शिरोमणि' अलंकरण से अलंकृत किया।

इसके साथ अन्य साध्वीजी की शासन प्रभावना को बधाते हुए उन्होंने पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. को 'गणरत्ना' पद से विभूषित किया तथा सज्जनमणि साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. को 'संघरत्ना' उपाधि से नवाजकर उनका अभिनंदन किया।

जिस संघ में 'श्रमणी' बहुमान की परम्परा हो, उस संघ में सदैव प्रसन्नता का संचार होता है।

आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...अभिनंदन

शुभेच्छुक

**श्रीमती कंचनकँवर–स्व. श्री हेमचन्दजी, श्रीमती निर्मलादवी–स्व. श्री शरदचन्दजी**
**अतुल कुमार–ममतादेवी, अर्चित, आशीष कांकरिया**

**कंचन फिलिंग स्टेशन**

नियर मिशन ग्राउंड, ब्यावर (मो : 94140 08947)

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...

आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...अभिनंदन

शुभेच्छुक

**श्री सुमेरमल, प्रकाशकुमार, राजेन्द्रकुमार, प्रवीणकुमार**
**विक्रमकुमार बेटा–पोता बादरमलजी रिखबचन्दजी कंकु चौपड़ा**

कोट्टूर ( जिला बल्लारी ) मरूधर में गढ़ सिवाणा

**Firm : Apsara Textiles Kotturu**

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...

मंदिर और नाशिक में कच्छप मंदिर बनाकर अपने संवेदनशील प्रभु भक्त हृदय का परिचय दिया है, इसके साथ केसरिया का गज मंदिर जो 18 विशाल हाथियों पर खड़ा हुआ है, उसकी शोभा तो बिल्कुल अलग ही है।

आज निश्चित रूप से आचार्य महाराज अपने शिष्य को गणाधीश बनते हुए देखकर देवलोक से आशीर्वाद की बरसात कर रहे होंगे।

तो पहली बधाई पूज्यश्री की मातेश्वरी को, और दूसरी बधाई गुरूदेव के गुरूदेव को देता हूँ।

अब आप ही बताईयें कि मैं तीसरी बधाई किसे दूँ?

आप सबको पता है कि तीसरी बधाई के हकदार पूज्य गुरूदेव श्री हैं। मेरी ओर से, सकल मुनि मंडल की ओर से, सकल संघ की ओर से पूज्यश्री को गणाधीश बनने की बधाई देता हूँ।

आज बहुत सारी खुशियों के बीच एक गम भी है। काश! आज पू. माताजी म. और बहिन म. भी इस कार्यक्रम में उपस्थित होते तो इस कार्यक्रम की गरिमा में ओर भी अभिवृद्धि होती। पर योग है, होनी है। होनी को काई टाल नहीं सकता। मैं बहिन की ओर से भाई को बधाई देता हूँ और उस बहिन को भी बधाई देता हूँ, जिसका भाई आज गणाधीश पद पर विराजमान हो रहा है।

पूरा खरतरगच्छ प्रसन्न है, आनंदित है, लोंगो के आनंद का कोई पार नहीं। सारे साधु-साध्वियों की ओर से बधाई के निरंतर समाचार प्राप्त हो रहे हैं। पूज्य मनोज्ञसागरजी म.सा., पूज्य गणि श्री पूर्णानंदसागरजी म. सा., पूज्य मुक्तिप्रभसागरजी म.सा., विचक्षण मंडल से महत्तरा श्री विनीताश्रीजी म., मनोहर मंडल से प्रवर्तिनी श्री कीर्तिप्रभाश्रीजी म., पवित्र मंडल से श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म , प्रमोद मण्डल से बहिन म., चंपा मण्डल से सूर्यप्रभाश्रीजी म. एवं विमलप्रभा श्रीजी म., प्रेम-तेज मण्डल से (सुलोचना श्रीजी म. उपस्थित ही हैं) कल्पलताश्रीजी म. इन सबकी और से लगातार समाचार मिल रहे हैं कि आप हमारी ओर से बधाई देना, वर्धापना करना, कामली ओढाना।

आज हमारे पू. मुक्तिप्रभ सागरजी म.सा. , पू मनीषप्रभसागरजी म. , पू मंयकप्रभसागरजी म. ,मेहुलप्रभसागरजी म. एवं सारे गुरूभ्राता उपस्थित होते तो आनंद शतगुणित हो जाता। हमारे पूरे 'मणि मण्डल की ओर से -शासन मणि ' संघ वाणी' का अभिनंदन- अभिवंदन करता हूँ।

निश्चित ही गच्छाधिपति समारोह की चादर का यह कार्यक्रम हमारे मन और नयन, दोनों को पवित्र करने वाला है। पुनः पुनः पूज्यश्री को वंदना- अभिवंदना- अभिवंदना-वर्धापना!

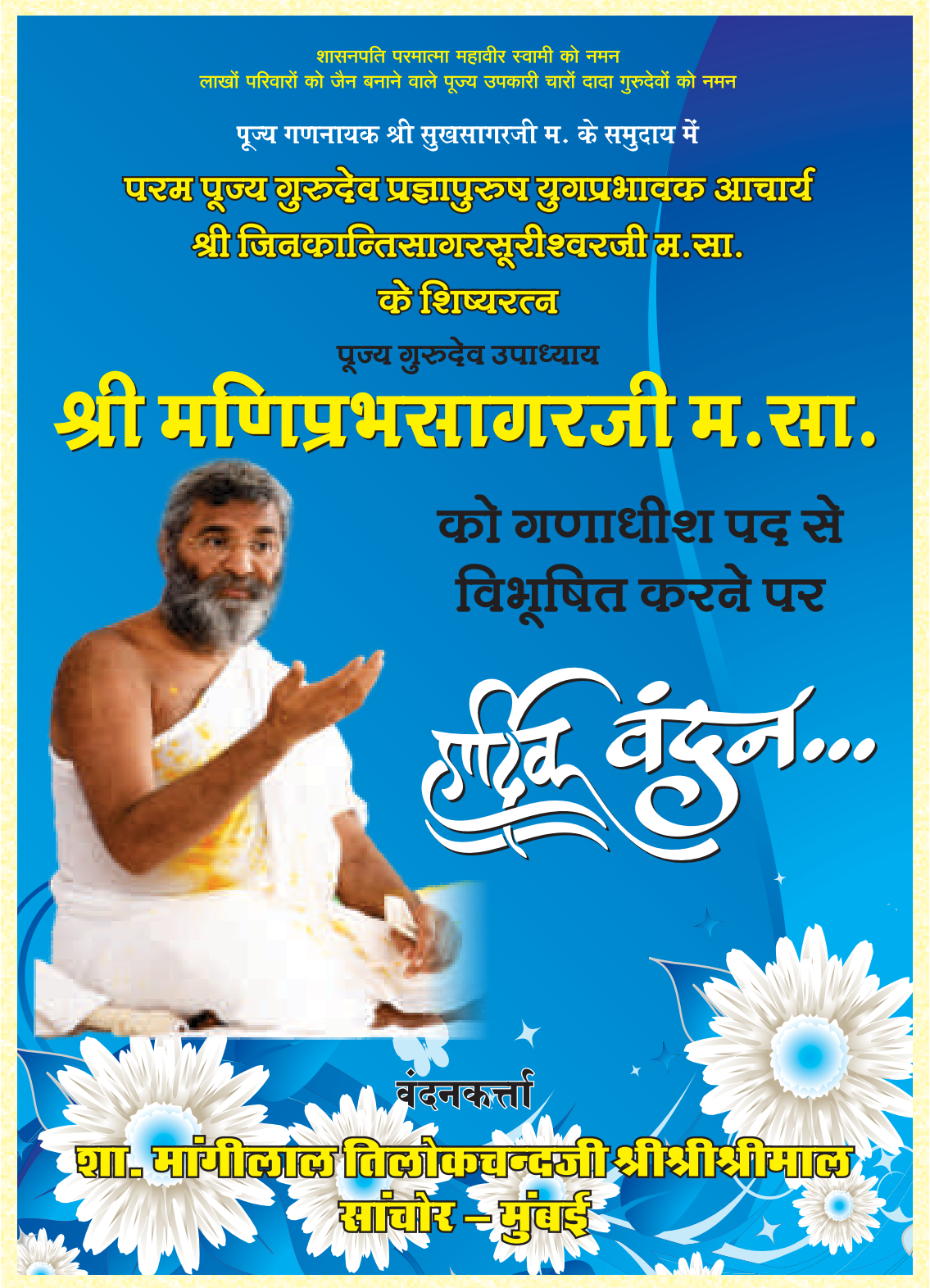
शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद से
विभूषित करने पर
हार्दिक वंदन...
वंदनकर्त्ता
शा. मांगीलाल तिलोकचन्दजी श्रीश्रीश्रीमाल
सांचोर – मुंबई

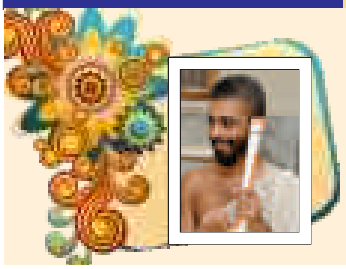

# आलोक भरा सफर 'मणिप्रभ'

मुनि मनितप्रभसागर

**'मणिप्रभ'** एक पहचान है त्नीरता, वीरता और गंभीरता की। **'मणिप्रभ'** कोई नाम नहीं है अपितु एक ऐसा आलोक पुंज है कि जिससे त्नारती और आकाश ही नहीं, संपूर्ण ब्रह्माण्ड आलोकित हुआ है। **'मणिप्रभ'** कोई सामान्य व्यक्ति नहीं अपितु मणि की आभा से भरपूर विराट्, असीम, जीवंत और प्राणवान व्यक्तित्व है, जिससे बीसवीं और इक्कीसवीं दोनों शताब्दियां समान रूप से लाभान्वित और गौरवान्वित हुई हैं।

**'मणिप्रभ'** एक उजला... पावन रास्ता है, जो भी इससे गुजरा है, वह पवि> और ऊर्जावान् बना है। जो भी एक बार **'मणिप्रभ'** की रोशनी में आया, वह मणि की उजास और प्रकाश पाने के लिये फिर फिर आया है। जो भी एक बार **'मणिप्रभ'** के उपवन में आया, वह मणि की सुवास और सहवास को पाने के लिये बार बार आया है।

23 जून 1973 का दिन पूरे खरतरगच्छ के लिये ही नहीं, जिनशासन के लिये ही नहीं, संपूर्ण मानव जाति के लिये वरदान साबित हुआ। इसी दिन मा> तेरह वर्ष की नाजुक उम्र में मीठालाल मणिप्रभसागरजी, माताजी रोहिणी देवी रतनमालाश्री जी, दस वर्ष की उम्र में बहिन विमला विद्युत्प्रभाश्रीजी के नाम से जाने जाने लगे। वेश बदला तो व्यक्तित्व बदला। नाम बदला तो लक्ष्य बदला।

पूज्य आचार्य श्री के प्रति पूज्य गुरूदेव श्री का समर्पण अद्भुत था। वे सर्वात्मना अर्पित थे पूज्य आचार्य श्री को। न कोई इच्छा, न कोई कामना। हर त्नाडकन उनके चरणों में अर्पित हो गयी थी। ऐसा कहना और अत्नाक उचित होगा कि पूज्य आचार्य श्री की आज्ञा पूज्य श्री की त्नाडकन बन गयी। उनका हर इशारा कदम था। पूज्य श्री छोटी सी एक भी ऐसी प्रवृत्ति से कोसों दूर थे जिससे आचार्य श्री का हृदय दु:खी हो। या उन्हें ऐसा लगे कि उनका निर्माण उनकी त्नारणा के अनुरूप नहीं हो पाया है।

दिनोंदिन पूज्य श्री के व्यक्तित्व में निखार आने लगा। अल्पकालावधि में उन्होंने संस्कृत, प्राकृत, न्याय,

ज्योतिष, व्याकरण विषयों का अत्नययन ही नहीं किया अपितु अच्छी पकड प्राप्त कर ली। उनकी इन्द्रत्नानुषी आभा से पूरा वायुमंडल सुनहरा एवं सुहावना बन गया। आचार्य श्री वृक्ष थे तो पूज्य श्री छॉव थे! आचार्य श्री सागर थे तो पूज्य श्री लहर थे! आचार्य श्री मांझी थे तो पूज्य श्री नौका थे! एक सूरज तो एक उर्जा! एक नदी तो एक त्नारा! एक दूसरे में अस्तित्व ऐसा विलीन हुआ कि अद्वैत की वीणा बज उठी।

पूज्य श्री ने परमात्मा महावीर की वाणी को मा> लेखन और प्रवचन के रूप में ही नहीं सात्नाा है बल्कि तदनुरूप जीवन शैली का भी निर्माण किया है। आज वे स्वयं एक इतिहास पुरूष के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके है। उनका जीवन एक ऐतिहासिक ग्रंथ बन चुका है जो कहीं से भी

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

**परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य**
**श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.**

**के शिष्यरत्न**

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

## शत शत वंदन...

वंदनकर्त्ता

**शा. कन्हैयालाल भगवानदासजी डोसी**
**चौहटन – मुंबई**

पढो, एक नयी स्फूर्ति.....ऊष्मा और रोशनी का अहसास देता है।

उनका लेखन जितना सटीक होता है, प्रवचन उतना ही विषय) और जीवन रूपांतरण सूत्रें से भरा होता है। लेखन में हर बार एक नवीन विशिष्टता नजर आती है तो प्रवचन मौलिक चिंतन की त्रारा में बहता है।

उनके प्रवचनों में जागृति का आलोक है तो जीवन की कला भी है। उनमें चिंतन की चॉंदनी है तो गंभीरता की सुवास भी है। उनमें तात्विक आनंद भी है तो हास्य की ठुहारें भी है। आगमों का नवीन विश्लेषण है तो वैज्ञानिकता का पुट भी है।

वे मात्र खरतरगच्छ की अमानत ही नहीं है, वे संपूर्ण जिनशासन की एक महान् विरासत है। जितना उनका खरतरगच्छीय श्रावकों के प्रति वात्सल्य है उतना ही तपागच्छीय एवं अन्य गच्छीय श्रावकों के प्रति भी। वे भी पूज्य श्री के प्रति उतने ही आस्थावान् और समर्पित हैं।

उनके लिये तो यह कहना संकीर्णता का परिचायक होगा कि वे खरतरगच्छ के ही हैं। वे सभी के हैं और सब उनके हैं।

वे जब भी किसी से मिलते हैं तो गच्छ, पंथ, संप्रदाय की संकीर्ण वैचारिक दीवार से बाहर निकलकर मानव जाति के विशाल नभ में उपस्थित हो जाते हैं।

उनके लिये तो मानव जाति का मसीहा कहना ही समुचित है। वे संत हैं, और एक ऐसे संत जो सकल भारत के लिये एक प्रेरणा एवं जागृति की मशाल है।

वे विस्मृत-पथिकों के लिये मार्ग है तो गतिहीन व्यक्तियों के लिये ऊर्जा है। वे अंत्रोरे में दीपक है तो त्रूान में भटकती नैया के लिये माझी है।

पूज्य श्री का जीवन-दर्शन अनेकांत की त्रारती पर खिला हुआ है। वे एकान्त चिंतक नहीं है। उनका चिंतन गहरा है। वे स्वयं की परंपरा के पोषक है, उसके प्रति सम्मान है, गौरव है पर उनमें दूसरों को नीची निगाहों से देखने का

## सागर एक-तरंग अनेक

चतुर्विध संघ सहित पूज्यश्री का चातुर्मास सिद्धाचल की सुगंधित धरा पर था। उस रांका चातुर्मास में सिंवाची, मालाणी, भाटिपा, गोडवाड, जालोरी आदि विभिन्न स्थानों से भिन्न-भिन्न परम्परा के सैंकडों श्रद्धालु जुडे थे। गच्छ भेद के कारण उनमें क्रियाभेद होना स्वाभाविक था।

जब यह बात आई कि यहाँ खरतरगच्छ की समाचारी के अनुसार ही प्रतिक्रमण होने चाहिये तब पूज्यश्री ने कहा- मैं श्रद्धालुओं की श्रद्धा पर आग्रह का कोई भार नहीं थोपना चाहता। प्रतिक्रमण जो व्यक्ति जिस विधि से चाहेगा, उसी विधि से करेगा और वह विधि हम स्वयं करवायेंगे पर शर्त है कि वह अन्यत्र किसी भी धर्मशाला-उपाश्रय में जाकर नहीं करेगा।

परिणामस्वरूप उस चातुर्मास में खरतरगच्छ, तपागच्छ और त्रिस्तुतिक परम्परा के श्रावकों ने एक साथ एक ही मण्डप में प्रतिक्रमण के पावन विधान का परिपूर्ण आनंद उठाया।

इसी प्रकार हैदराबाद में तीन हजार श्रावकों का महाजनमेदिनी के साथ पूज्यश्री ने तीनों परम्पराओं का जो सांवत्सरिक प्रतिक्रमण भावार्थ सहित करवाया, उसे याद करके आज भी हैदराबाद वासी आश्चर्य मिश्रित आनंद से भर उठते है।

पूना, हैदराबाद आदि अनेक स्थानों पर खरतर-तपा, दोनों परम्पराओं से सम्पूर्ण चातुर्मास में प्रतिक्रमण करवाने का सहजत: कार्य सिद्ध हुआ।

धन्य हैं ऐसे शासन प्रेमी संत को, जो अपने गच्छ, सिद्धान्त, परम्परा और पूर्वाचार्यो के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखते हुए सारे गच्छों के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखते हैं।

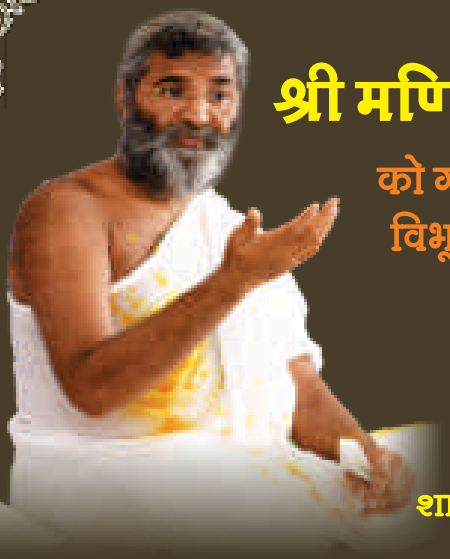

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**

को गणाधीश पद से
विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन

प्रेरणा

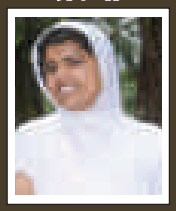

प.पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म.सा.

एवं गृह प्रवेश ऋषभ निवास के उपलक्ष में

शा. बाबुलालजी कन्हैयालालजी भूरचन्दजी मालू

हरसाणी वाले

फर्म

**महापद्मावती ग्रुप**

दिनेशकुमार बाबूलालजी मालू

इचलकरंजी-सूरत

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

**श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.**

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

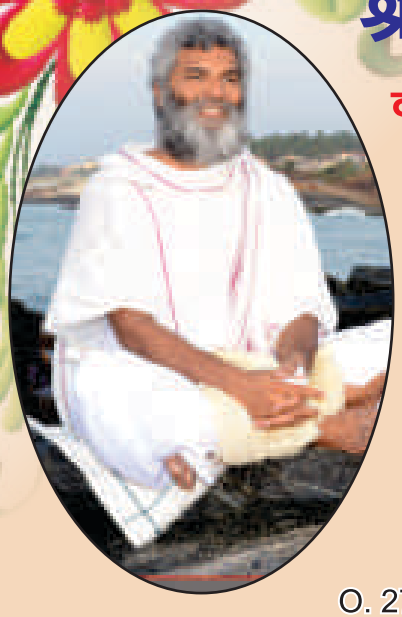

हार्दिक वंदन...

वंदनकर्त्ता

**शा. मिश्रीमल पारसमलजी मेहता**

Jitu Jain 98791 92262 सिणधरी (राज.) Kushal Jain 99135 82175

**RUPLAXMI SAREES**

Designer Sarees

O. 2788-89, Upper Ground, Millennium Textile Market,
Ring Road, SURAT-2 Ph. : 0261-3049772

अनुचित एवं ओछा दृष्टिकोण नहीं है।

उनका व्यक्तित्व समन्वय का प्रतीक चिन्ह है। उनमें विपरीत त्र्रुवी आयामों का बहुत ही लुभावना समन्वय है।

वे ज्ञानपिपासु हैं तो क्रिया निष्ठ भी कम नहीं हैं।

वे व्यवहार में जीते हैं तो निश्चय में भी उनकी रमणता उतनी ही हैं।

वे सामाजिक सुत्रार पर जोर देते हैं तो व्यक्तिगत रूपांतरण भी उतना ही आवश्यक समझते हैं।

वे अंत्रा पुरातन मान्यताओं में विश्वास नहीं करते हैं तो परंपरागत विशिष्टताओं में भी आस्था रखते हैं।

वे सुवित्रा का सामयिक महत्व जानते हैं तो परीषह की आंच में भी तपे हैं।

वे महावीर की वाणी के प्रति निष्ठावान् हैं तो उसे विज्ञान की कसौटी पर कसने का अद्‌भुत गुण भी है।

वे अत्रयात्म के प्रति श्र)ाशील हैं तो तर्क की प्रखरता भी कम नहीं है।

वे पुरूषार्थ की प्रतिमा हैं तो भाग्य को भी स्वीकार करते हैं।

वे परम विद्वान् हैं तो विनयवान् भी कम नहीं है।

वे कल्पनाशील हैं तो यर्थाथता का भी परिपूर्ण बोत्रा है।

वे कवि हृदय हैं तो संवेदनशीलता के भी त्रानी हैं।

वे सरल हैं तो प्रखरता भी कोई कम नहीं है।

उनका व्यक्तित्व मत्रुर है तो गंभीर भी उतना ही है।

वे स्वयं के प्रति कठोर हैं तो औरों के प्रति कोमल भी उतने ही हैं।

वे भावुकता से परिपूर्ण हैं तो दार्शनिकता भी उतनी ही विस्तृत है।

वे हास्य की जीवंत मूरत है तो चिंतन की सुन्दर सूरत है।

आपके व्यक्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण अंग है- खुशमिजाजी। वे हर समय प्रसन्न ही नजर आते हैं। और उनके पास आने वाला भी खुशी के गुलाल से गुलाबी हो जाता है।

## तितिक्षा का शिखर

यह रोमांचकारी प्रसंग पूना चातुर्मास 1991 का है। चातुर्मास में उपधान तप का महाविधान गतिमान था। अचानक एक विघ्न आ खडा हुआ- पूज्यश्री के पथरी (STONE) की समस्या खडी हो गयी।

नारियल पानी आदि के सारे उपाय निष्फल गये। देखते देखते दर्द इस हद तक बढ गया कि न सहा जाये, न कहा जाये, न रहा जाये।

ऑपरेशन करवाने में समस्या यह थी कि पन्द्रह दिन के विश्राम-काल में उपधानवाही श्रावक-श्राविकाओं का क्रिया-विधान सुचारू रूप से सम्पन्न कैसे हो?

ऐसी स्थिति में पूज्यश्री ने बेहोशी के बिना शल्य-चिकित्सा करवाने का निर्णय कर लिया। जिसने भी इस फौलादी निर्णय को सुना, वह विस्मित हुए बिना न रहा।

पूज्यश्री यह प्रसंग सुनाते हुए रोमांचित हो जाते हैं और फरमाते हैं- मूत्रवाहिनी से बेहोश हुए बिना operation करवाने की वह पीडा ठीक वैसी ही थी, जैसी शास्त्रों में नारकी जीवों की वेदना की व्याख्या पढी है। यह प्रसंग **'जीवो अण्णो शरीरो अण्णो'** इस सूत्र का साक्षात् प्रतिबिम्ब था। अन्यत्व भावना भी पुष्टि करने वाले पूज्यश्री के मुख पर उन क्षणों में भी प्रसन्नता और समता थी तथा भक्तजन उनकी सहनशीलता पर आफरीन थे।

उनकी भाषा में कभी भी आवेश या आवेग नहीं होता है। वे हमेशा मीठे ही बोलते हैं। इसीलिये मारवाड में उन्हें मीठा बावसी के नाम से ही अत्राक जाना जाता है। वृ)जन जब उन्हें प्रेम से मीठा महाराज कहकर बुलाते हैं तब उनके चेहरे का रंग सतरंगी हो जाता है।

वे हर समय कार्य में व्यस्त रहते हैं पर थकान की एक रेखा भी उनके मुखमंडल को छू नहीं पाती है। प्रसन्नता के पुष्प सदैव उनके मुख चमन पर महकते रहते हैं।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले
पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से
विभूषित करने पर

## हार्दिक वंदन...

वंदनकर्त्ता

**शा. चम्पालाल रिकबचन्दजी श्रीश्रीमाल**

**देवड़ा – मुंबई**

वे हॅसते हैं तो लगता है कि शत शत गुलाब के फूल उनके होठों पे खिल गये हों।

वे बोलते हैं तो ऐसा लगता है जैसे मेरे जीवन की कथा ही सुना रहे हों।

वे चलते हैं तो ऐसा लगता है जैसे सफलता उनके चरणों को स्पर्श करने के लिये बावरी हो रही हो।

वे गाते हैं तो लगता है जैसे पतझड में बहार आ गयी हो।

वे मुस्काते हैं तो ऐसा लगता है जैसे पूर विश्व महक उठा हो।

उनका जीवन त्रिवेणी संगम सा है। उनमें बालक का निर्दोष हास्य है। युवा सी स्फूर्ति है। प्रौढ सा चिंतन है तो वृ) सा अनुभव है।

उनके जीवन में सबसे ज्यादा महत्व संयम का है.. दीक्षा का है। जब श्रावकजन ज्यादा ठहरने की विनंती करते है तो पूज्य श्री कहा करते हैं कि कोई दीक्षार्थी हो तो हम कितनी भी दूर होंगे, दौडे आयेंगे।

मैंने देखा है कि प्रतिष्ठा का काम हो या अन्य। पर दीक्षा को प्राथमिकता देते हैं।

मेरे मोकलसर की दीक्षा का आयोजन हो या सिवाना की। पूज्य श्री मेरी दीक्षा करवाने जयपुर से पत्रारे जबकि दीक्षा करवा कर उन्हें पुन: प्रतिष्ठार्थ मालपुरा ही जाना था। आदोनी एवं सिंधानूर में दीक्षा करवाने के लिये कई सौ कि. मी का चक्कर भी लेना पडा। पर आपने स्वास्थ्य की प्रतिकूलता झेलते हुए भी आनंद के साथ दीक्षा के आमंत्रण को स्वीकार कर लिया।

मुझे इस बात पर सदैव आनंद मिश्रित नाज रहेगा कि आपका मैं शिष्य हूँ तो आपका अनुज भी हूँ। इस नाते मुझे दुगुना स्नेह, वात्सल्यभाव एवं आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिला है। यह मेरे लिये गौरव से परिपूर्ण हर्ष का विषय है।

अनुशास्ता के स्वरूप में अनुशासन पूर्वक संघ को संचालित कर संघीय साधाना के नये कीर्तिमान् स्थापित करें। आपका पथ निष्कंटक बने। इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ.....अनंत वंदनाओं के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

## आहार में अनासक्ति

यह प्रसंग बहुत पुराना नहीं है। इचलकरंजी चातुर्मास के श्रद्धा, अपनत्व और अहोभाव से छलकते दिनों में एक बार बादाम का पेस्ट किसी घर से बहोरकर लाये थे। पर हुआ ऐसा कि वह लाजवाब पेस्ट मधुर न होकर कडवा-खारा था।

साधुओं ने थोडा सा पेस्ट मुँह में रखा तो मुखमुद्रा विकृत हुए बिना न रही। मुँह ही नहीं, जैसे रोम-रोम भी कटुत्व से भर गया। सारे साधु-समझ गये कि इस बादाम पेस्ट को बहोराने वाली श्राविका से असावधानीवश चीनी की जगह लवण डल गया है।

जितने मुनि, उतने विचार! अलग-अलग भावधारा में बहते मुनियों में से कोई अपना तर्क देता हुआ परठने की बात परोस रहा था तो कोई मुनि लवण से परिपूर्ण खारे पेस्ट को अनमनी नजरों से देखता हुआ चिन्ता कर रहा था।

यद्यपि गुरूदेव इस अल्पकालावधि में उस पेस्ट को ग्रहण कर चुके थे पर उनके चेहरे पर शिकन या शिकायत की कोई लकीर नहीं थी।

अन्य मुनिवर दूसरे विचार व्यक्त करते तब तक तो पूज्य प्रवर अन्य पात्रों में पडे कटु बादाम पेस्ट को ग्रहण कर चुके थे। और यह प्रक्रिया इतनी तीव्रगति से हुई कि शिष्यों को इंकार करने का भी समय नहीं मिला। गुरूदेव की अनासक्ति देखकर सारे संत अवाक् रह गये।

मात्र एक ही स्वर श्रद्धा के तारों पर तैरने लगा- अहो! धन्य है ऐसे अनासक्त गुरूदेव को, जिन्होने रसना को जीतकर आसक्ति को हरा दिया है।

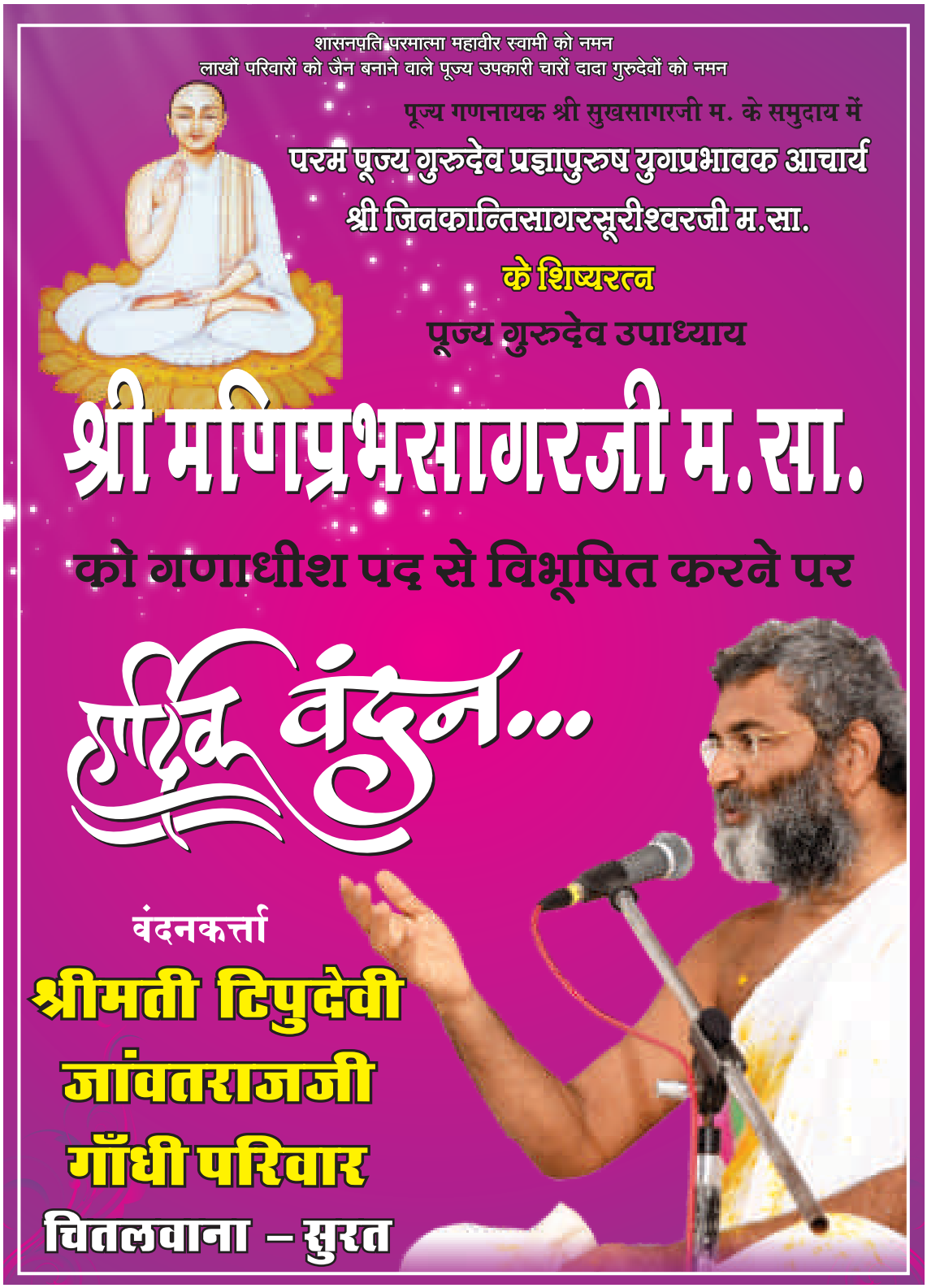
शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद से विभूषित करने पर
हार्दिक वंदन...
वंदनकर्त्ता
श्रीमती टिपुदेवी
जांवतराजजी
गाँधी परिवार
चितलवाना – सुरत

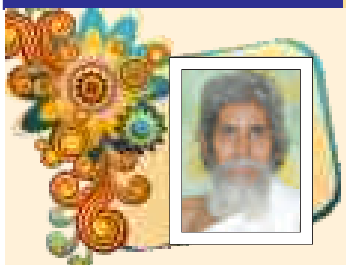

# खरतरगच्छाधिपतिजी एक परिचय

मुनि मोक्षप्रभसागर

**- गुरू गुण गीतिका-**

वर्तमान वीर शासन के गौतमस्वामी हो,
खरतरगच्छ संघ के गच्छाधिपति हो,
प्रथम गच्छ के अनमोल रत्न हो,
वीर शासन के लाडले वीर पुत्र हो ।।1।।

मणिप्रभसागर सूरि नाम चमका रहे हो,
गच्छाधिपति पद शोभा रहे हो,
आचार्य पद के पदवी धारी हो,
संघ में आप पुण्यधारी हो ।।2।।

मोकलसर की धरा के अनमोल सितारे हो,
लुकड़ गौत्र के भारत प्रसिद्ध उजियारे हो,
पिता पारसमलजी का नाम चमका रहे हो,
माता रोहिणी देवी के आँखों को तारे हो, ।।3।।

चर्तुविध संघ को पार उतारने वाले हो,
समता गुण से आत्म कल्याण करने वाले हो,
शुधत्मा से आत्म तारने वाले हो,
गुणो की प्राप्रि से मोह जीतने वाले हो ।।4।।

मन्म भूमि छोडकर रायपुर का कल्याण करते हो,
मारवाड़ छोडकर छतीसगढ को बहान करते हो,
धन्य है जीवन आपका कन्याकुमारी से आऐ,
अब तो शारवतगिरि आपको जल्दी याद आऐ ।।5।।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुधसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन... अभिनंदन

आपके कुशल नेतृत्व में
खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

आपकी कृपादृष्टि हम
पर सदा बनी रहे...

शा. लालचंद, खुशालचंद, जितेन्द्रकुमार, राहुल, निर्मल बेटा पोता
स्व. श्री आसुरामजी फोफलीया परिवार गढ़ सिवाना निवासी

SRI RAJDHANI ENTERPRISES

Exporters, Merchants & Commission Agents.
Dealers in : Pulses & Food Grains.
Jain Building, Charch Road, HIRIYUR- 577598.
Chitradurga Dist. (Karnataka)

STD. 08193
Off : 227308, 227563
Mob : 9845059004

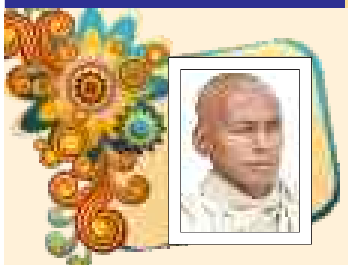

# विराट् व्यक्तित्व

मणिचरण रज मैत्रीप्रभसागर

पंख के बिना पक्षी अधूरा है।
पानी के बिना सागर अधूरा है।।
माँ के बिना ममता अधूरी है।
गुरू बिना सारा जीवन अधूरा है।।

संयम का दान देने वाले मेरे अनन्य अनन्य उपकारी गुरू भगवंत गणाधीश पू. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के विषय में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाने तुल्य है। योग्यता व क्षमता न होते हुए भी भाव विभोर होकर मे। अपने अन्तर के उद्गार व्यक्त करने का प्रयास कर रहा हूँ।

भाग्य की विचित्र विडम्बना... बचपन में ही पिता श्री का परलोक गमन हो गया। मातु श्री ने पुत्र व पुत्री को सुसंस्कारों की सम्पत्ति देकर संयम के सत्पथ पर आरूढ़ होने के लिए तैयार किया। शासन सम्राट् आचार्य भगवन्त श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वर जी म.सा. ने अनुशासन व वात्सल्य की वर्षा करते हुये अपने पट्टधर शिष्य को कलश बनाने का अथक प्रयास किया।

हकीकत में मेरे आराध्य गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. खरतरगच्छ के दैदीप्यमान् नक्षत्र हैं। उनमें 50 गाथा प्रतिदिन कण्ठस्थ करने की अद्भुत् क्षमता है। आप श्री ने अनेक शास्त्रों का अभ्यास करके अपनी बुद्धि को परिपक्व बना दिया है। ज्ञान के साथ विनय का अनुसंधान जुड़ने से सोने में सुहागा हो गया।

यह गुण आप श्री के जीवन में अपूर्व कोटि का है। गुरू म. की कभी अवज्ञा नहीं की, इच्छा के विपरीत एक कदम नहीं उठाया। जिन-जिन साधु-साध्वी भगवन्तों ने आपको ज्ञान दान दिया, उन सभी को अपने हृदय में सम्माननीय स्थान दिया। ''उत्तराध्ययन सूत्र'' का प्रकरण है- विणय धम्मो मूलो''।

धन्य हैं पूज्य श्री, जिनके जीवन में विद्वत्ता के साथ सरलता का कितना सुन्दर सामंजस्य है। शास्त्र कह रहे हैं- ''सरलता ही मोक्ष की सीढ़ी'' है। प्रतिष्ठाएँ, अंजनशालाकाएँ, दीक्षाएँ, उपधान, छःरी पालित पैदल संघ और अनेक धार्मिक अनुष्ठान आपश्री के वरदहस्त से सम्पन्न हो रहे हैं।

शासन देव से प्रार्थना करता हूँ- आपश्री दीर्घायु बने। धर्म आराधना, शासन प्रभावना और आत्म साधना आपके जीवन में उदयाचल के दिनकर की भाँति सदा प्रगतिशील रहे।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

## हार्दिक वंदन..

तपोरत्ना गुरुवर्या प. पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. का
चातुर्मासिक प्रवेश दि. १७ जुलाई २०१५ शुक्रवार को होगा

वंदनकर्त्ता

## श्री खरतरगच्छ जैन श्री संघ, बाड़मेर

# गच्छ और गच्छाधिपति

मुनि समयप्रभसागर

खुशी के मारे फूले न समा न रहे थे सिंधनूरवासी, जिन्हें मुमुक्षु सुश्री शिल्पा नाहर की दीक्षा के प्रसंग पर अनायास ही एक और स्वर्णिम महोत्सव मनाने का सौभाग्य मिल गया। परम पूज्य गुरुदेव मरुधरमणि उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. के गणाधीश पद आरोहण के आयोजन का ..... देश के कोने-कोने से पधारे संघों के स्वागत का .....गुरुदेव श्री को गच्छाधिपति पद के आरोहण के समय कामली ओढ़ाने का।

दीक्षा महोत्सव निहारने को आतुर हजारों-हजारों आँखें निर्निमेष दृष्टि से मंच की ओर टिकी थी। इस अवसर पर सोने में सुहागा साबित हो रहा था- पूज्यश्री को गच्छाधिपति पद की चादर समर्पण समारोह।

सभी के आकर्षण के केन्द्र बिन्दु थे सरलता, सहजता, सौम्यता, निर्भीकता, सहनशीलता, कर्मठता, वीरता, धीरता, गंभीरता, निरहंकारिता, शासन प्रभावकता, मिलनसारिता, साधकता, गुणानुरागिता, निपुणता आदि अनेक गुणों से विभूषित पूज्य गुरुदेव श्री मणिप्रभसागर जी म.सा.।

शताधिक संयमियों को रजोहरण प्रदान करने वाले, लाखों प्रभु भक्तों के दर्शनों की चाह पूरी करने के लिए स्थान-स्थान पर जिनेश्वर परमात्मा की अंजनशलाकाएं व प्रतिष्ठा कराने वाले, उपधान महातप की आराधना के द्वारा हजारों श्रावक-श्राविकाओं को चारित्र धर्म का रसास्वादन कराने वाले, भव्य छह 'री' पालित संघों द्वारा महातीर्थों की स्पर्शना को आतुर यात्रियों को पावन निश्रा प्रदान करने वाले।

एक ऐसे शिल्पी, जिनकी कल्पनाओं में

अभिनव आकृतियाँ उभरी, उसे कलात्मकता के साथ भव्यता प्रदान कर जन-जन के आस्था व आकर्षण के केन्द्र के रूप में विकसित की, जहाज मंदिर (माण्डवला), गज मंदिर (केशरिया जी), राजहंस मंदिर-(कुशलवाटिका- बाड़मेर) सुघोषा घण्ट मंदिर (शाहदा) कच्छप मंदिर-नासिका एवं मयूर मंदिर (जिन हरि विहार-पालीताणा) गुरुदेव श्री में कल्पनाशक्ति व उसे यथार्थ रूप में लाने की संकल्प शक्ति के दर्शन होते हैं।

कुशल निर्देशक गुरुदेव श्री वर्षीतप पारणा के प्रसंग पर गठित ''श्री जिनदत्त-कुशल खरतरगच्छ पेढी'' दादावाड़ियों के जीर्णोद्धार एवं रख-रखाव के साथ शासन के चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर यह पेढी।

जो पद लिप्सा से सदा दूर रहे, ऐसे ही व्यक्तित्व

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

वंदनकर्त्ता

मोहिनीदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलालजी संकलेचा

पुत्र ललितकुमार, राजकुमार, कैलाशकुमार, गौतमचन्द

पौत्र CA मनीषकुमार, मिशालकुमार पौत्री रुचिका,

काजोल, ईशिता संकलेचा रासोनी परिवार

पौत्री जवांई निकिता–नवीनकुमारजी बाफना

दौहित्रा प्रीत बाफना

पादरु – चैन्नई – हैदराबाद

फर्म : नवनिधि इण्टरप्राईजेज, चैन्नई

रुपम कलेक्शन्स, हैदराबाद

के चरणों में पद स्वयं समर्पित हो रहा था। ''आसमाँ भी झुक सकता है, झुकाने वाला चाहिये'' की उक्ति को चरितार्थ जान पद स्वयं आज अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा था क्योंकि आज पूज्यश्री गच्छाधिपति पद को स्वीकार करने की स्थिति में आ गये थे।

चारों ओर से बधाई रूपी नदियाँ उमंग और उल्लास से इठलाती पूज्य श्री का स्पर्श पाने को आतुर थी। अनुकूलता और प्रतिकूलताओं के बीच सदा समता धारण करने वाला सागर आज भी सहज रूप से सौम्यता से गंभीरता धारण किए हुए नजर आया।

बधाईयों और चादर समर्पण कार्यक्रम को शीघ्रता से ही नए चरण में प्रवेश करा दिया क्योंकि समय अपनी गति से पसार हो रहा था। पूज्य श्री का उद्‌बोधन और दीक्षा का कार्यक्रम भी बाकी ही था। इसलिए इतने समय से दृष्टा बने बैठे गच्छाधिपति के रूप में अपना पहला उद्‌बोधन देने के लिए तैयार हुए तो सारा सभा मण्डप मौन धारण कर अनुशासित हो गया।

जिनशासन की वर्तमान में प्रचलित परम्पराओं में सबसे प्राचीन गच्छ (राज गच्छ कहलाने वाला) अपने स्वर्णिम इतिहास के हजार वर्ष पूर्ण करने के निकट है। सहस्राब्दी को रचनात्मक कार्यों के साथ भव्यता से मनाने की घोषणा पूज्यश्री के उद्‌बोधन का पहला अंश था तो दूसरा अंश भी कम महत्वपूर्ण न था।

वर्तमान परिस्थितियों में गच्छ में सामंजस्य बिठाते हुए उन्नति की राह पर चलते-चलते गति में जो मंदता आ गई है, उसे गति देने के लिए चातुर्मास के तीन-साढ़े तीन महीने पश्चात् ऐसे स्थल पर ''साधु साध्वी सम्मेलन'' का आयोजन करना, जहाँ सभी शातापूर्वक पहुँच कर अपना सहयोग अर्पण कर सफलता दिला सके। सभी साधु-साध्वियों की उपस्थिति अनिवार्य रहेगी। श्रावक-श्राविका उस सम्मेलन को मात्र निहार ही नहीं सकेंगे बल्कि अपने सकारात्मक सुझाव लिखित में दे सकेंगे।

''एक सबके लिए, सब एक के लिए'' का आदर्श अपना कर संघ व गच्छ के स्वर्णिम और चहुँमुखी विकास के लिये अग्रसर गुरुदेव सबसे सहयोग की अपेक्षा रखते है। सबके सहयोग से हर सदस्य अपने आपको सहयोगी के रूप में समर्पित कर गौरव का अनुभव कर सके।

संघ व गच्छ ऐसे सक्षम, कुशल, साहसी, दीर्घदृष्टा नेतृत्व पर प्रसन्न्ता का अनुभव करे, यह स्वाभाविक ही है।

सभी की दृष्टि पूज्यश्री के इशारों की तरफ है, तो पूज्यश्री भी चाहते हैं कि आप अनुशासित रहकर, आपस में प्रेमपूर्ण संबंधों से गच्छ व शासन को मजबूती प्रदान करें।

गच्छ और गच्छाधिपति, दोनों एक दूसरे के पूरक है। हम सभी संघ व गच्छ विकास के लिए अनुशासित रहकर उनके कदम से कदम मिलाकर, अपने आपको तन, मन और धन से समर्पित करें।

गच्छ और गच्छाधिपति सबके लिए मंगलमय कामनाएं। वीतराग परमात्मा एवं दादा गुरुदेव व खरतरगच्छ अधिष्ठायिका माँ अम्बिका से यही प्रार्थना है कि गच्छाधिपति स्वस्थ व दीर्घायु रहते हुए गच्छ व शासन की शोभा में सदैव अभिवृद्धि करते रहें।

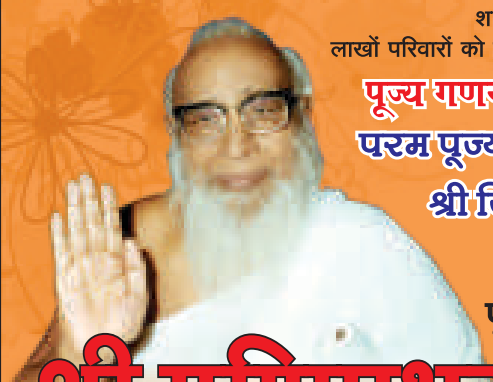

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

## गुरु वंदन...

वंदनकर्त्ता

## संघवी शा. दलीचंदजी मिश्रीमलजी

## मावाजी मरड़िया परिवार

## चितलवाना - सुरत

# मैं अंधेरा, गुरु सवेरा

मुनि विरक्तप्रभसागर

क्या लिखूं... कैसे लिखूं, कुछ भी समझ में नहीं आ रहा, क्योंकि गुरू की महिमा अनंत और अपार है। मैं पिछले आठ वर्षो से पूज्यश्री की निश्रा में रहकर परमात्मा के द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलकर आत्मा को परमात्म-सम बनाने के लिये प्रयत्नरत हूँ। पिछले आठ वर्षों में मैंने पूज्यश्री के भीतर छिपे कई गुणों के दर्शन किये। आपश्री के मुख मंडल का तेज अप्रतिम है तो आपकी सरलता अद्वितीय है। आपकी सेवा में कई धनी आते हैं तो कई सामान्य स्थिति वाले भी आते हैं परंतु आपके व्यवहार में दोनों के प्रति समान-दृष्टि देखने को मिलती है।

आपमें समता-भावना गजब की है। गोचरी में जो आया, वह वापर लिया। सरस आहार आये तो क्या, निरस आहार आये तो क्या, हम कभी कह देते हैं कि सब्जी में नमक नहीं है आदि, तब गुरूदेव एक ही बात कहते हैं कि जीभ को मत देखो। शरीर को भाड़ा देना है, जो आये, वह ले लो।

शासन एवं गच्छ के कार्यों के प्रति निष्ठा एवं पूर्ण समर्पण भाव से अपने स्वास्थ्य को अनदेखा करके शासन एवं गच्छ के कार्यो को प्राथमिकता देना कर्त्तव्य परायणता का परिचय देता है। मुझे दीक्षा लिये डेढ़ वर्ष ही हुआ है। इस अल्प दीक्षा पर्याय में ही मुझे गुरूदेवश्री की सेवा का सौभाग्य मिल गया। मैंने कभी सोचा नहीं था कि इतने अल्प समय में पूज्यश्री के निकट रहने का सुअवसर मिल जाएगा। नूतन मुनि जीवन में गुरूदेव के निकट रहने में और गुरूदेव की सेवा में तत्पर बनने में आपश्री की कृपादृष्टि ही दृष्टिगोचर होती है।

आपश्री की शासन-सेवा में सदा तत्परता देखकर मुझमें भी नयी उमंग और उल्लास का संचार

होता है। आप दीर्घायु बन सदा शासन सेवा करते रहें और मैं आपके चरणों की शीतल छाया में रहता हुआ स्वाध्याय और वैयावच्च के परम अमृत पान का सौभाग्य पाता रहूँ।

गुरू भक्ति में रहते हुए मैं गुरू गौतम स्वामी की तरह परम विनयवान्, आज्ञावान् बनते हुए गुरू भक्ति के नए-नए आयामों का स्पर्श करता रहूँ।

मेरी हर श्वास में गुरूभक्ति बस जाये, मेरे रोम-रोम में गुरू भक्ति समा जाये, मेरे हर कदम गुरू भक्ति में आगे बढ़े, गुरू भक्ति ही मेरे प्राण बने। मेरे रोम-रोम में प्रभु भक्ति, गुरू भक्ति एवं शासन भक्ति बस जाए। श्रुत भक्ति रूपी नाव में सवार होकर भवसागर से पार होकर अष्ट कर्मों से मुक्ति पाकर शाश्वत सुख का स्वामी बनूं, मेरे अन्त:करण में सदैव यही नाद गुंजता रहे परमात्मा को पाने का। परमात्मा बनने का सबसे सरल, सहज मार्ग गुरूभक्ति है।

मैं अबोध हूँ, बालक हूँ। आप तो ज्ञानी गुरूदेव हैं। मेरी गलतियों को कभी दिल में न धरना। आप क्षमावान है, मुझे क्षमादान देते रहे। मेरी अंगुली थामे मुझे सदैव आगे बढ़ाते रहे, जिससे मणिरुपी आदर्श मेरे जीवन को ज्योतिर्मय बना दे। आपके गुणों की सौरभ से मेरा जीवन भी महक उठे।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

## को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

प्रेरणा

प. पू. बहिन म.
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

वंदनकर्त्ता

# सोनाणी बोहरा परिवार

बाड़मेर - जोधपुर - जयपुर

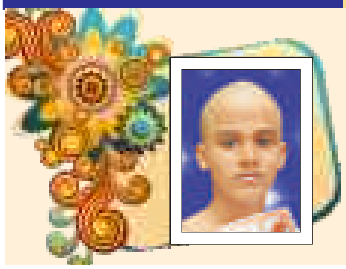

# मेरे प्यारे गुरुदेव

मुनि श्रेयांसप्रभसागर

धरती को कागज करूँ,
सागर को करूँ स्याही,
वन की करूँ लेखनी,
गुरू गुण कही न जाई।

गुरू की महिमा अपरम्पार है। मैं अबोध भला गुरू महिमा का क्या वर्णन कर सकूं ?जो बडे-बडे ज्ञानी भी गुरू की महिमा का वर्णन नहीं कर सकते। मैं लेखक नहीं कि गुरू महिमा को शब्दों में लिख सकूं लेकिन सबको गुरु की महिमा का वर्णन करते देख मेरे मन में भी इच्छा हुई कि मैं भी मेरा अनुभव लिखुं।

मैं अपने आपको अत्यंत सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे 8 वर्ष की उम्र में ही गुरूदेव का सानिध्य मिला। गुरूदेव के वात्सल्य भरे व्यवहार ने मुझे इतना आकर्षित किया कि मैं सांसारिक पढाई छोड़कर गुरूदेव की शरण में आ गया। गुरूदेव के वर्षीतप पारणे से मैं गुरूदेव के साथ रहा। गुरूदेव की शरण में मेरा धार्मिक अध्ययन शुरू हुआ। गुरूदेव को कितना भी काम हो लेकिन पढाने में कभी मना नहीं करते। कोई अकेला भी पढने वाला हो तो भी लगन से पढाते हैं और समझ में न आए तो अलग-अलग उदाहरण से समझाते हैं।

गुरूदेव की इतनी महर हमारे परिवार पर बरसी कि जहाँ अनंत सिद्ध आत्माएँ सिद्ध हुई, ऐसी परम पावन सिद्धाचल भूमि पर हमारे परिवार को दीक्षित किया। अगर गुरूदेव हमें दीक्षित न करते तो आज हम संसार में होते, जहाँ न आराधना हैं, न साधना। पूरे दिन टी.वी देखना, घूमना, फिरना, खाना, पीना आदि में

अमूल्य मानव जीवन खो देते।

अभी मेरी उम्र छोटी है, साधु जीवन है, साधु जीवन में कभी अनुकूलता मिलती है तो कभी प्रतिकूलता। यह गुरुदेव का विशेष गुण है कि प्रतिकूल गोचरी वे स्वयं वापर लेते हैं और अनुकूल सामग्री हमें परोसते हैं।

कभी विहार करके थक जाते है तो नींद ज्यादा आती है, सुबह देरी से उठता हूँ तो भी गुरूदेव मुझे प्रेम से उठाते हैं, कभी नाराज नहीं होते और प्रतिक्रमण कराते हैं।

गुरूदेव के चरणों की शीतल छाया एवं गुरूदेव की सेवा का लाभ मुझे सदा मिलता रहे। मुझे गुरूदेव इतना स्वाध्याय और अध्ययन करावे कि मुझमें छिपी हुई असीम क्षमताएँ प्रगट हो और मैं अपनी आत्मा का कल्याण करता हुआ शासन की सेवा में सदैव तत्पर रहूँ।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

MAHAAVIR

वंदनकर्त्ता

भंवरलाल छाजेड़

ओमप्रकाश छाजेड़

अशोक छाजेड़

MAHAAVIR

**MAHAAVIR UNIVERSAL HOMES PVT. LTD.**

66/67, Mahavir Center, 4th floor, Plot no. 77,
Sector 17, Vashi, Navimumbai- 400703.

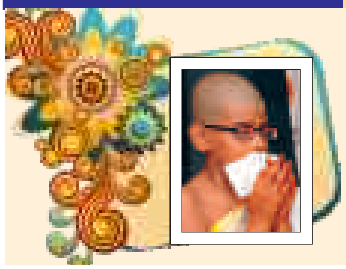

# GANADHISH MANIPRABH SAGAR JI

Muni Malayprabhsagar

G - Genious Person
A - Active Person
N - Nice Person
A - Accurate Person
D - Dedicate Person
H - Humble Person
I - Intelligent Person
S - Sweet Person
H - Honest Person
M - Minded Person
A - Attractive Person
N - Noble Person
I - Impressive Person
P - Positive Person
R - Religious Person

A - Admirable Person
B - Bold Person
H - Happiest Person
S - Soft Person
A - Advisable Person
G - Globel Person
A - Appleful Person
R - Respectable Person
J - Joyful Person
I - Ideal Person

गुरूदेव आपश्री को बहुत-बहुत शुभकामना। आप मुझे भी ऐसा आशीर्वाद दे कि मैं भी अपनी तरह पढ-लिख कर होशियार होकर संघ का काम और नाम करूँ।

पू. गणाधीशजी की दीक्षा के समय उपस्थित श्रमणी वृंद

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

प्रेरणा

प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.

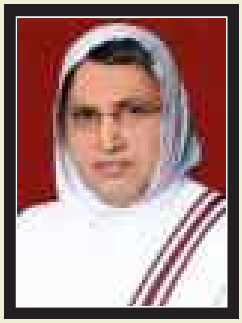

प. पू. साध्वी
श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा.

श्रद्धावंत

## श्री आदिनाथ जिन मन्दिर एवं दादावाडी ट्रस्ट हुबली

गब्बुर रोड़, हुबली-580 020 ( कर्नाटका ) फोन : ( 0836 ) 4261809, मो. 094484 68512

Email : adinathjinkushal@gmail.com

भीकचन्द छाजेड़ अध्यक्ष | पुखराज कवाड़ सचिव | बाबूलाल संखलेचा कोषाध्यक्ष | पारसमल माण्डोत उपाध्यक्ष | रमेश बाफना उपाध्यक्ष

लालचन्द टिमरेचा संयुक्त सचिव | भंवरलाल ओस्तवाल ट्रस्टी | मोहनलाल बाफना ट्रस्टी | माँगीलाल बंदामुथा ट्रस्टी

प्रकाश छाजेड़ ट्रस्टी | रमेश ललवाणी ट्रस्टी | गौतम गोलेच्छा ट्रस्टी

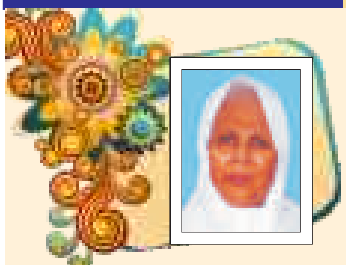

# खरतरगच्छ का भाग्य सितारा

मनोहर शिशु मंडल निर्देशिका प्रवर्तिनी श्री कीर्तिप्रभाश्री,
मंडल प्रमुखा साध्वी मनोरंजनाश्री आदि मनोहर मंडल

मुखरित हुई नई ऋचाएं, नवयुग के निर्माण की,
निर्झर झर-झर बहता कहता, रीत गति उत्थान की।
गच्छ गौरव गतिमान बने, सृजन स्वेद की सरिताओं में,
युग के स्वप्न साकार करे, सघन तमस की वनिताओं में।

जिनेश्वर परमात्मा ने हमें, मोक्षमार्ग का महादान किया,
दादा दत्त कुशलसूरि ने, सद्धर्म को महाप्राण दिया।
आओ, सत्पुरूषों के हम योगदानों को याद करें,
संस्कृति के नये पलों का, मिलकर शंखनाद करे।

खरतरगच्छ में मतभेदों की, फैली है सब ओर विषमता,
शासन प्रेमी अब अनेकान्त से, लिखे सत्य की एकरूपता।
सबल भुजाओं से ही रक्षित, होती नौका की पतवार,
चीर चले बाधाओं की छाती, पार करे मझधार।

''खरतरगच्छ के अभिनव चाणक्य,'' आपको शुभकामनाएँ हमारी हैं,
''गणाधीश पद'' आरूढ हुए आप, ''मनोहर'' भावना न्यारी है।
''कीर्ति'' पताका फर-फर फहरें, कार्य
करना है तत्परता से,
''रत्नत्रयम्'' की सुवास लिए,
रखना कदम निडरता से।।

तन की शक्ति मन की भक्ति,
कर्त्तव्य दर्शन की हो शीतल धारा,
जिससे चमक उठेगा फिर,
''खरतरगच्छ का भाग्य सितारा''

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

**परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य**

**श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.**

के शिष्यरत्न

**पूज्य गुरुदेव उपाध्याय**

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

## शत शत वंदन...

मार्गदर्शक – प्रेरणादाता

प.पू. गच्छाधिपति उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. एवं
प.पू. वसीमालानी रत्न शिरोमणि मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा.
के सानिध्य में जीर्णोद्धार चल रहा है।

**वंदनकर्त्ता**

## जैन श्वेताम्बर श्री संघ,

**देवीकोट जि. जैसलमेर (राज.)**

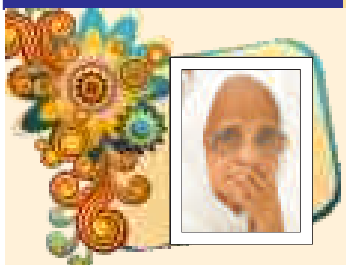

# कवि हृदयी–पूज्यश्री

साध्वी शशिप्रभाजी

पूज्यश्री कवि, प्रवचनकार, तत्वज्ञ हैं। आप श्री के प्रवचनों में, तत्त्व विवेचन में नयापन है। आपश्री की प्रवचन शैली में अर्थवत्ता है। आपश्री की प्रवचन शैली विषयोचित ओजपूर्ण, गम्भीरता पूर्ण एवं कल्पनाशीलता से परिपूर्ण हैं।

पूज्यश्री एक चिन्तक एवं गूढ़ विचारक हैं। वे गहन से गहन विषयों को इतने सहज व सरल शैली से समझाते हैं कि श्रोता गण को सुनने में आनन्द की अनुभूति होती हैं।

आपश्री की कवित्व शैली भी शब्द विन्यास में स्पन्दन उत्पन्न करती है। तथा शब्द के रहस्य तक पहुँचने की ललक बनी रहती हैं।

पू. गणाधीश श्री जी अपनी संयम यात्रा के दौरान जन-जन में अहिंसा-संयम तप की फुहार बहाते हुये अनेक स्थानों में दीक्षाएँ, प्रतिष्ठाएँ आदि शोभनीय कार्य को मूर्त रूप देने की सान्निध्यता प्रदान करते हैं।

आपश्री के पावन सान्निध्य को पाकर जन समूह मानव जीवन के सार तत्त्व की अनुभूति करते हैं। आपके मार्ग दर्शन से कई संघो ने, कई व्यक्तियों ने अपनी अनूठी पहचान बनायी। वास्तव में ऐसे सद्गुरू की छत्र छाया में सभी आनन्द की अनुभूति करते हैं।

आपश्री के नेतृत्व में जैन जीवन शैली लेखन कार्य भी क्रियाशील हैं, जो भौतिक युग में मर्यादित एवं संयमित जीवन जीने के लिये आम जनता को प्रेरणा देती रहेगी। वास्तव में गुरू ही एक ऐसे तत्त्व होते है, जो हमारे जीवन को सन्तुलित एवं सुनियोजित बनाने के लिये हमारी आत्मा को सम्यक्त्व की राह दिखाते हैं।

गुरू की विशेषता एवं विशालता को शब्दों में बांधना बहुत कठिन है। बस, एक ही वाक्य में कह सकते हैं कि तीन तत्त्व में गुरू तत्त्व का वैसा ही महत्व हैं जैसा तराजू में संम्तोलक का क्योंकि संम्तोलक ही तराजू के असली महत्व को निखारता है।

ऐसे सद्गुरू स्वरूप पू. उपाध्याय भगवंत के चरणों में सविनय सश्रद्धा भक्तिभरी वन्दना करते हुये गणाधीश पद से सुशोभित होने के इन क्षणों में अन्तर्मन से यह कुशल मंगल कामना हैं कि आपके कुशल नेतृत्व और वात्सल्य भरे वरद हस्त से सभी को युगों-युगों तक आशीर्वाद मिलता रहें।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक
श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष
युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागर
सूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

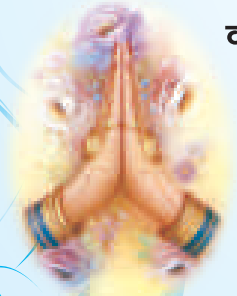

## हार्दिक वंदन...

वंदनकर्त्ता

## श्री नाकोड़ा भैरव पूर्णिमा मण्डल

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ भैरव मंदिर ट्रस्ट, बिजयनगर (अजमेर)

समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण

# हार्दिक शुभकामना.....

साध्वी सुलोचनाश्री

हृदय में अपार प्रसन्नता, मन में अतीव आनंद और दिल में अनंत खुशियों की बहार छाई है। हमारे सरताज, जन-जन के आस्था केन्द्र, खरतरगच्छ नभोमणि पू. गुरूदेव गच्छाधिपति पदालंकरण से अलंकृत हुए हैं। निश्चित रूप से यह हम सबके प्रबल पुण्योदय का ही सुफल है। आपकी निश्रा में हमारा गच्छ, संघ उन्नति के शिखर पर आरूढ है ही, अब और अधिक प्रगति साधकर नया कीर्तिमान स्थापित होगा। आपकी प्रभावक सन्निधि में एकता, सौहार्द्रता का वातावरण सर्जित होगा। तप, त्याग, स्वाध्याय, ध्यान का नाद गूंजेगा। वास्तव में आप जैसे गच्छाधिपति को प्राप्त कर हर व्यक्ति धन्यता का अनुभव कर रहा है।

आपका जीवन पद लिप्सा से सर्वथा पृथक् है। आपकी वाणी में मिश्री से भी अधिक माधुर्य छलकता है। शब्दों का विवेक भी बड़ा गहरा है। भाषा का संयम भी बडा ही सूक्ष्म है। आप हितकर, मितकर और मधुर ही बोलते हैं। आपका जीवन फूल के समान कोमल, अगरबत्ती के समान सुगन्धित है। आपकी दृष्टि सूक्ष्म और अन्तर्भेदिनी है।

समय-समय पर वाचना, स्वाध्याय के माध्यम से आपके विचारों को सुनने-समझने का मौका मिला, तब तब मैंने पाया कि गुरूदेव का आगमिक ज्ञान गहन और चिन्तन कितना सूक्ष्म है।

आपके जीवन-सरोवर में सरलता, उदारता, निस्पृहता, ज्ञान गरिमा, परस्पर आत्मीयता के सरसब्ज कमल विकसित हैं।

सच में आप जैसे गुरूदेव को गच्छाधिपति के रूप में पाकर सकल खरतरगच्छ संघ गौरवान्वित है।

दादा गुरूदेव एवं पू. आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा. से यही प्रार्थना करती हूँ कि आपके मार्गदर्शन में हमारा गच्छ दिन दोगुनी रात चौगुनी प्रगति करता रहे। आपकी अविरल कृपा धारा जन-जन पर प्रवाहित होती रहे, सतत आपका सुसानिध्य प्राप्त हो, इन्हीं मंगलभावों के साथ पुन: हार्दिक अभिनंदन-वंदन।

परम पूज्य उपाध्याय भगवंत

# श्री मणिप्रभसागर जी म.सा.

के

## 'गच्छाधिपति'

## पदारोहण पर

## हमारी हार्दिक मंगलकामना

एवं

धमतरी नगर की धन्य धरा पर परम पूजनीय

**बहिन म. साध्वी**

**डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्री जी म.सा.**

की सुशिष्या

**पू. साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभा श्री जी म.सा.**

**पू. साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्री जी म.सा.**

के चातुर्मासिक मंगल-प्रवेश पर आप सकल श्री संघ सादर आमंत्रित है।

निवेदक

## श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ, धमतरी

: संपर्क :

अध्यक्ष : प्रकाश वैद्य- 89623 90711

सचिव : विनय पारख- 94255 12744

# हार्दिक अभिनंदन

चम्पाकली सूर्यप्रभाश्री, पूर्णप्रभाश्री

जीवन का नया पाथेय, नयी ऊर्जा, नयी प्रेरणा का नजराना लेकर हमारे सामने उभर आये हैं पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागर जी म. सा. गच्छाधिपति बनकर। आपश्री के इस व्यक्तित्व पर अतीव गर्व महसूस कर रहे हैं।

हाँ! पद और प्रतिष्ठा काबिलियत को नवाजने का एक माध्यम है। उसमें भी विरल व्यक्तित्व की प्रतिभा को जब नवाजते हैं तो उस पद और प्रतिष्ठा की गरिमा में अपने आप चार चाँद लग जाते हैं।

वैसे तो आपश्री के काबिलियत की प्रशंसा करना मानो चाँद को आइना दिखाने वाली बात है। जैसे दूज के चाँद के आकार का वर्णन करना असंभव है, हाँ उसके आकार के अनुभव मात्र से हृदय के तार झंकृत हो जाते हैं। ठीक वैसे ही सभी के दिलों में उमंग के उत्साह का सागर हिलोरे ले रहा है। आपके व्यक्तित्व का वर्णन करना नामुमकिन है, फिर भी मेरे बौने शब्द आपश्री के व्यक्तित्व का वर्णन करने से मन को रोक नहीं पा रहे हैं।

आपश्री के व्यक्तित्व में, निर्मलता सरलता का विशेष संग है।
जिनशासन में सम्पूर्ण समर्पित आत्मा और अंग है।
हर किसी को अपना बना लेने का विशेष रंग है।
देख ये दिव्य नजारा, वास्तव में सभी दंग है।
सच कहुँ तो,
चारों ओर आपकी आन बान और शान है।
हर पल प्रभु व दादा गुरुदेव रहते मेहरबान है।
आखिर क्युं न खुश हो हम सभी,
हमें भी तो मिल रहा ऐसे गुरु का ज्ञान है।
अन्त में यही कहना चाहती हूँ,
जिनशासन में आप के कार्य Bright हैं।
खरतरगच्छ में आप Super light हैं।।
धर्म कार्य में तत्पर हो चाहे Day-Night हैं।
मार्ग दर्शन आपका मानों सबके लिए Sunlight हैं।।

अनंत अनंत मंगलकामनाओं के साथ

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

## परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

# श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

प्रेरणा

खानदेश शिरोमणि
दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.

वंदनकर्त्ता

# श्री कांति मणि विहार

## श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं दादावाड़ी ट्रस्ट

आड़गाँव-नाशिक

# हार्दिक बधाई

साध्वी सुलक्षणाश्री

पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर मणिप्रभसागरजी म.सा. को गच्छाधिपति पदारोहण की पावन वेला में श्रद्धा का थाल सजाकर, भक्ति भाव के पुष्प अर्पित कर, रोम-रोम से मंगल अक्षतों से बधाकर, हार्दिक शुभकामना सह अभिनंदन-वन्दन करती हूँ।

आपश्री के नूतन पदारोहण से सम्पूर्ण वातावरण में हर्ष-उल्लास एवं आंनद छाया है। समस्त सृष्टि, सारा परिवेश खुशियों से झूम उठा है।

श्रमण परम्परा के ज्योतिर्मय नक्षत्र, महान् अध्यात्म साधक, महामनीषी, साहित्यकार पूज्य गुरूदेव का जीवन निरपेक्ष हैं। उन्हें किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं है। यश, कीर्ति पद व्यामोह से कोसों दूर है। आप समुद्र से जल ग्रहण कर धरती पर बरसने वाले बादल नहीं अपितु अद्‌भुत दिव्य महामेघ है, जिन्हें लेना नहीं, देना ही देना है। अनवरत ज्ञानदान, तपदान, चारित्र दान बरस रहा है, जो योग्य है, वह प्राप्त कर लेता है और जीवन की दरिद्रता समाप्त कर लेता है।

गुरूदेव एक महासागर है, जिसके ओर छोर को देख पाना हमारी आँखों की शक्ति के बाहर है। आप अनंत आकाश है, जिसकी ऊंचाईयों को मापना असंभव है। आपश्री का दर्शन मन को शांति देता है। आपका सान्निध्य आत्मिक सुख व चित्त की प्रसन्नता प्रदान करता है। आपका सरल, सहज सद्‌व्यवहार हृदय में गुणराग पैदा करता है। आपका आशीर्वाद मनवांछित फल प्रदाता है। आपके संघ में हर किसी का आदर, बहुमान है। शंकाओं से ग्रस्त व्यक्ति समाधान का प्रकाश आपकी सन्निधि में पाता है। आपकी विद्वत्ता दसों दिशाओं में प्रसृत है। क्या कहूं, वास्तव में आपका व्यक्तित्व अवर्णनीय है।

ऐसे परम पूज्य गुरूदेव के गच्छाधिपति पदालंकरण के पावन पलों ने पुनः शुभकामना अर्पित करती हूँ। आशा है, आपकी तारक सर्वसिद्धिदायक निश्रा तथा मंगलमय मार्गदर्शन में हमारा गच्छ, संघ एवं समाज धर्म की राह में, एकता में, साधना में उन्नति करेगा। दादा गुरूदेव से प्रार्थना हैं कि आशीर्वाद की ऐसी अमृत वर्षा करें, जिससे पू. गुरूदेव शताधिक वर्ष तक आरोग्यवान् रहकर जन-जन को सन्मार्गदर्शित करते रहें। इसी भावों के साथ अनंतानंत - वन्दन अभिनंदन।